किष् अ (कांभल।

बीतवोन्ननाथ ठाकूत।

শ্রী আশুতোষ চৌধুরী কর্তৃক

সম্পাদিত।

विक नः कल्लक हो है, शीश्ल्म लाइ खिट इहेटक

প্রব্যাশিত।

মূল্য এক টাকা।

কলিকাতা

আদি ব্রাক্ষাসমাজ যন্ত্রে শ্রীকালিদাস চক্রবর্তী দারা মুদ্রিত।

৫৫ নং অপর চিৎপুর রোড।

मन ১२२०।

উৎ मर्ग।

শ্রীযুক্ত সত্যেক্রনাথ ঠাকুর দাদা মহাশয় কর কমলেষু

स्ि श्व।

विषय ।			शृष्ठी ।
্ৰাণ		• • •	
পুরাতন	• • •	•••	2
न् ञन	• • •	• • •	8
উপকথা	• • •	1	>>
যোগিয়া		,	>8
শরতের শুক্তারা	• • •		\$5
কাঙালিনী		• • •	₹8
ভবিষ্যতের রঙ্গভূমি		• • •	२त
মথুরায়	• • •	• • •	98
'নের ছায়া	• • •		ত'প
- কাথায়	• • •	• •	83
ৰাস্তি	• •	}	88
পা্যাণী মা			' &'
হদদৈর ভাষা	• • •	• • •	84
विरमनी क्रमन अक	, •• •	• • •	88
বিটি পড়ে টাপুৰ্ টুপুৰ্	ननो .	• • •	9,8
ब्रांड खोई हल्ला	• • •		93

বিষয়			शृंघा ।	
প্রোনো वर्ष	•••	•••	be	
হাসিরাশি	• • •	• • •	20	
या नकी	• • •	• • •	৯৬	
আকুল আহ্বান		• • •	るる	
মায়ের আশা	• • •	• • •	707	
গত্ৰ	• • •	• • •	200	
পত্ৰ	• • •	• • •	209	
জন্মতিথির উপহার	•••	•••	* ???	
विवि	• • •	4 4 •	>> 8	
পত্ৰ. পত্ৰ	• • •	• • •	> 45	
পত্ৰ	• • •	• • •	707	
বিরহীর পত্র	•••	• • •	704	
পত্ৰ	• • •	•••	\$85	
পত্ৰ.	• • •	•••	> 6 >	
, পত্ৰ: দৈশা:	• • •	• • •	> c c;	
द्भारा ।	• • •	, •••	202	
পাধীর পালক	•••	• • •	2B0	
वानीकीम	• • •	•••	746	
ৰসন্ত অবসান- ৰাশি	•••	•••	ه احد	
*1 1**.	P 4 (. 4 6	2900	

বিষয়			পৃষ্ঠা
বিরহ	• • •	• • •	396
ৰাকি	• • •	•••	39b.
বিলাপ		• • •	>92
मात्रा दिका	• • •	***	727
আকাজ্ঞা	***	• • •	745
তুমি	• • •	•••	348
ভূল	•••	••	35 6
কে তুঁছ	. • •	* • •	3bb
গান	***	• • •	285
ছোট ফুল	• • •	• • •	325
रयोवन अश्र	•••	• • •	320
क्रिक मिलन	• • •		398
গীতোচ্ছাস	• • •	• • •	726
खन (১)	• • •	• • •	***
छन (२)	• • •	• • •	3 a ² 9
रू श्वन		•••	المالية
বিব্সনা	◆ • •	• • •	なると
বাহ	• • •	• • •	₹••
FZ9	1 • •	• • •	2.5
क्षेत्र, वाकान	•••	• • •	₹'*₹

বিষয়			मृष्ट्री ।
অঞ্চলের বাতাস	• • •	• • •	२०७
प्तिट्य यिनन	• • •	. • • •	२०8
তমু	• • •	• • •	२०६
শ্বতি	* * \$	• • •	२०७
হৃদয়-আসন	• • •	• • •	२०१
কল্পনার সাথী	•••	• • •	२०५
হাসি	•••	• • •	२०२
চিত্রপটে নিজিতা রম্প	ীর চিত্র	• • •	२५०
কল্পনা-মধুপ	(• •	• • •	٤>>
পূৰ্ণ মিলন	•••	• • •	२ऽ२
শ্রান্তি	• • •	• • •	२১७
वनी	* •	* • •	\$ \$8
ক্ষেন	• •	• • •	378
মোহত	* • •	• •	२५७
প্ৰিত্ৰ প্ৰেম	. • •	• • •	२५१
भूतिज की वन	• • •	*••	424
মরীচিকা	• • •	• • •	२,४%
পান রচনা	• • •	***	२२०
मकानि दिनाम	• • •	• • • •	445
क्रांब	• • •	• • •	०२२६

বিষয় ৷			शृंधी।
বৈতরণী			२२७
यानव-श्रमदात्र वानना	•• •	16	₹ ₹8
সিন্ধু গৰ্ভ	•••		२२ ¢
क्ष व्यन्ख	• • •	1 '	2 26
সমুদ্র	4 • •	•••	:` २२ १
অন্তমান রবি		• • •	२२৯
অন্তাচলের পরপারে	• • •	• • •	२७०
প্রত্যাশ	• • •	≱. • • •	२७১
স্থাক্ত জ্ব	•••	•••	૨ ૭૨
অক্ষতা .	• • •	, • • •	২৩৩
জাগিবার চেষ্টা	•••	• • •	২৩৪
কবির অহকার	• •	• • •	၁၁૯
বিজ্ঞনে	• • •	• • •	২৩ৢ৬
সিষ্তীরে	•••	• • •	₹ 99
সত্য (১)°	•••	• • •	२०४
সত্য (২)	• • •	• 5 •	২৩৯
অঝিভিযান	• • •	• • •	≥8•
আত্ম অপমান	, * * *	•••	283
কুদ্ৰ আমি	•••	77- ♥ ● ●	₹8\$
প্রার্থনা		4.4.4	२४७

	100	•	
বিষয়।			शृष्ट्रा ।
বাসনার ফাঁদ	• • •	•••	₹88
চিরদিন		• • •	₹84
বঙ্গ ভূমির প্রতি.		• • •	২৪৯
বঙ্গ ভূমির প্রতি. বঙ্গবাসীর প্রতি			२७>
আহ্বান গীত		• • •	२७७
শেষ কথা		•••	२२०

প্রাণ

মরিতে চাহি না আমি স্থানর ভূবনে, শানবের মাঝে আমি বাঁচিবারে চাই ু এই স্থ্য করে এই পুষ্পিত কাননে कीवल क्षत्र गांद्य यि शांन शांरे! ধরায় প্রাণের খেলা চির তরঙ্গিত, বিরহ মিলন কত হাসি অশ্রময়,— মানবের স্থথে হঃখে গাঁথিয়া সঙ্গীত যদি গো রচিতে পারি অমর আলয়! তা যদি না পারি তবে বাঁচি যত কাল তোমাদেরি মাঝখানে লভি যেন ঠাই, তোমরা তুলিবে বলে সকাল বিকাল • নব নব সঙ্গীতের কুস্থম ফুটাই! হাসি মুখে নিও ফুল, তার পরে হার ' क्ल निङ्क क्ल, यनि म् क्ल खकात्र!

किए ७ (कांगल।

পুরাতন।

হেথা হতে যাও, প্রাতন!
হেথার নৃতন,থেলা আরম্ভ হয়েছে
আবার বাজিছে বাঁলি,
আবার উঠেছে হাসি,
বসম্ভের বাতাস বয়েছে।
স্থনীল আকাশ পরে
ভল্ল মেন্ব পরে থরে
শ্রাম্ভ যেন রবির আলোকে—
পাথীরা ঝাড়িছে পাথা,
কাঁপিছে তক্তর শাখা,
ধেলাইছে বালিকা বালকে।

সমুথের সরোবরে আলো ঝিকিমিকি করেঁ— ছায়া কাঁপিতেছে থরথর,— জলের পানেতে চেয়ে घाटि वरम बार्ष्ड स्मरय-শুনিছে পাতার মরমর! কি জানি কত কি আশে চলিয়াছে চারি পাশে কত লোক কত স্থা হথে! সবাই ত ভুলে আছে— (कर् शंत्र (कर् नांत्र, - जूमि (कन माँ फ़ां अ ममूरथ! বাতাস যেতেছে বহি তুমি কেন রহি রহি তারি মাঝে ফেল দীর্ঘশাস। স্থদূরে বাজিছে বাঁশি, তুমি কেন ঢাল' আসি णिति गाँख विनाभ ° উ, क्यान।

উঠেছে প্রভাত রবি, অাঁকিছে সোনার ছবি, তুমি কেন ফেল তাহে ছায়া! वादिक (य हत्न यात्र, তারেত কেহ না চায়, তবু তার কেন এত মায়া! তবু কেন সন্ধ্যাকালে জলদের অন্তরালে न्कारम, धन्नात भारत हाम-নিশীথের অন্ধকারে পুরাণো ঘরের দারে কি দেখিতে আসিয়াছ! যাহা কিছু ফেলে গেছ (क् जात्नत कत्रित्व यजन! স্মরহণর চিহ্ন যত ছিল পড়ে-দিন-কত व'द्रि-পড़ा भाजांत यजन!

আজি বসস্তের বার

একেকটি করে হার
উড়ায়ে ফেলিছে প্রতি দিন;

ধূলিতে মাটিতে রহি
হাসির কিরণে দহি
হাসির কিরণে দহি
কণে কণে হতেছে মলিন।

ঢাক তবে ঢাক মুখ

নিয়ে যাও স্থুখ ত্থ

চেয়ো না চেয়ো না ফিরে ফিরে।

হেথার আলেয় নাহি;
অনস্তের পানে চাহি
আধারে মিলাও ধীরে ধীরে!

মুতন।

হেথাও ত পশে স্থ্যকর ! ঘোর ঝটিকার রাতে দারুণ অশ্নি পাতে विमीतिण य गिति-णिथत— বিশাল পর্বত কেটে, পাষাণ-ছদয় ফেটে, প্রকাশিল যে ঘোর গহার— প্রভাতে পুলকে ভাসি, বহিয়া নবীন হাসি, হেথাও ত পশে স্থ্যকর! হ্যারেতে উ কি মেরে ফিরে ত যায় না সে রে, শিহরি উঠে না আশকায়, ভাঙ্গা পাষাণের বুকে (थेना करत्र क्लान् ऋरथ, - रहरम जारम, रहरम ठरम यात्र ! হের হের, হায়, হায়,

যত প্রতিদিন যায়—
কে গাঁথিয়া দেয় ত্ণ জাল!
লতাগুলি লতাইয়া,
বাহগুলি বিথাইয়া
চেকে ফেলে বিদীর্ণ কয়াল।
বজ্রদক্ষ অতীতের—
নিরাশার অতিথের—
কোর সমাধি আ্বাস,—
ফ্ল এসে, পাতা এসে
কেড়ে নেয় হেসে হেসে,
অরকারে করে পরিহাস!

এরা সব কোথা ছিল।
কেই বা সংবাদ দিল।
গৃহ-হারা আনন্দের দল—
বিখে তিল শুন্য হলেঁ,
অনাহত আদেঁ চলে,
বাসা বাঁধে ক্রি'কোঁলাহল।

আনে হাসি, আনে গান,
আনেরে ন্তন প্রাণ,
সঙ্গে করে আনে রবিকর,
অশোক শিশুর প্রায়
এত হাসে এত গায়
কাঁদিতে দেয় না অবসর।
বিষাদ বিশাল কায়া
ফেলেছে আঁধার ছায়া
তারে এরা করে না ত ভয়,
চারি দিক হতে তারে
ছোট ছোট হাসি মারে,
অবশেষে করে পরাজয়।

এই যে রে মক্ত্ল,
দাব-দগ্ধ ধরাতল,
এই খানে ছিল "পুরাতন,"
এক দিন ছিল তার
শ্যামল-যৌবন ভার,
ছিল তার দুঁকিণ-প্রন।

यि (त्र (म हत्न (भन, मदम यि नित्य राग गांज गांन रांत्रि फ्ल फल, শুষ-স্মৃতি কেন মিছে त्राथ তবে গেল পিছে, खक माथा खक क्लमल ! সে কি চায় শুষ্ক বনে গাহিবে বিহঙ্গণণে আগে তারা,গাহিত (যমন ? আগেকার মত ক'রে ক্ষেহ তার নাম ধ'রে উচ্চসিবে বসস্ত পবন ? नटर नटर, तम कि रश ! , সংসার জীবনময়, নাহি হেথা মরণের স্থান। वाश्रद्ध, न् उन, वाश्र मटन करत्र निदत्र आध्र, তোর হুখ, তোর হুসে গান।

ফোটা' নব ফুল চ্য়, ওঠাঁ' নব কিশলয়, नवीन वमख आंग्र निरंत्र । (य योग्न (म हत्न योक्, সব তার নিয়ে যাক্, नाय তার याक् मूट्ह पिया। এ কি ঢেউ-থেলা হায়, এক আদে, আর যায়, कॅमिएज कॅमिएज बारम शिन, বিলাপের শেষ তান না হইতে অবসান কোথা হতে বেজে ওঠে বাঁশি! আশ্বরে কাঁদিয়া লই, खकारव छ मिन वरे এ পবিত্র অশ্রবারি ধারা। **मः मादि कित्रिय ज्**लि, ছোট ছোট স্থপগুলি त्रिं ि पिट्य शान दान काता।

না রে, করিব না শোক, এসেছে নৃতন লোক, তারে কৈ করিবে অবহেলা! সেও চলে যাবে কবে, গীত গান সাঙ্গ হবে, ফুরাইবে ছদিনের থেলা।

উপকথা।

त्यद्यत जाफ़ाल दिना कथन् द्य यात्र, वृष्टि পড়ে সারাদিন থামিতে না চায়। আর্দ্র-পাথা পাথীগুলি গীতগান গেছে ভুলি, নিস্তব্ধে ভিঞ্জিছে তক্ষণতা। বসিয়া অাধার ঘরে বর্ষার ঝর্ঝরে मत्न পড़ে कुछ উপकथा! কভু মনে লয় হেন এ সব কাহিনী যেন সত্য ছিল নবীন জগতে। উড়স্ত মেদের মত ঘটনা ঘটিত কত, সংসার উড়িত মনোরথে। রাজপুত্র অবহেলে कान् पारम , या हान, কত নদী কত সিশ্ব পার!

नद्रावत्र यां व्याना মণি হাতে নাগবালা বসিয়া বাঁধিত কেশ ভার। সিন্ধৃতীরে কতদ্রে कान् त्राकत्मत्र भूत्त খুমাইত রাজার ঝিয়ারি। হাসি তার মণিকণা (कर जारा (मिथिज ना, মুকুতা ঢালিত অশ্বারি। সাত ভাই একত্তরে চাঁপা হয়ে ফুটিত রে এক বোন ফুটিত পাক্ল। সম্ভব কি অসম্ভব একতো আছিল সৰ इिं। ভाই गडा **जात जून।** विश्व नाहि ছिल दौधा ना ছिल कठिन दाशा मारि ছिण विधिन्न विधान,

হাসি কান্না লঘুকায়া শরতের আলো ছায়া কেবল সে ছুঁরে যেত প্রাণ। थांकि ফুরায়েছে বেলা, ক্রগতের ছেলেখেলা, গেছে আলো-আধারের দিন। আর ত নাইরে ছুটি, (यथ ताका (शष्ट देति, পদে পদে शियम-ष्यीन। মধ্যাকে রবির দাপে বাহিরে কে রবে তাপে व्यानम् अफ़िर्फ मरव ठाम्र १ যবে হায় প্রাণপণ করে তাহা সমাপন (थनात्ररे भाजन (ज्या यात्र ।

योगिया।

वष्टिन পরে আজি মেঘ গেছে চ'লে, রবির কিরণ স্থা আকাশে উথলে। নিশ্ব শ্যাম পত্রপুটে আলোক ঝলকি উঠে, পুলক নাচিছে গাছে। नवीन योवन यम (थरमत्र मिलत्न कॅार्प, ष्यानम विद्या - पाटना नारह। জুঁই সরোবর তীরে নিশ্বাস ফেলিয়া ধীরে ঝরিয়া পড়িতে চায় ভূঁয়ে, অতি মৃহ হাসি তার; र्वत्रयात्र वृष्टिभात शक्षर्रेक् निद्य शिष्ट धूद्य। वाक्षिक वाभन প्राप ना का नि वा कार्न् थान यागिया त्रागिणी गाम क्वरत

ধারে ধীরে স্থর তার মিলাইছে চারি ধার আচ্ছন্ন করিছে প্রভাতেরে। গাছপালা চারি ভিতে সঙ্গীতের মাধুরীতে गग्नै र'रत्न धरत अक्षक्ति! এ প্রভাত মনে হয় আরেক প্রভাতময়, রবি যেন আরর কোন রবি! ভাবিতেছি মনে মনে কোথা কোন উপবনে কি ভাবে দে গাইছে না জানি, চোথে তার অশ্র রেখা, এक ट्रे (मर्छ कि (मथा, ছড়ায়েছে চরণ হ্থানি! তার কি পায়ের কাছে বাঁশিটি পড়িয়া আছে-व्यात्मा हामा भरपुरह कुरभारम।

यानिन यानां है जूनि ছিঁড়ি ছিঁড়ি পাতাগুলি ভাসাইছে সংসীর জলে ! বিষাদ কাহিনী তার সাধ যায় শুনিবার, কোন্ থানে তাহার তবন! তাহার আঁখির কাছে ষার মুখ জেগে আছে তাহারে বা দেখিতে কেমন। একিরে আকুল ভাষা ! প্রাণের নিরাশ আশা পল্লবের মর্ম্মরে মিশালো। ना-कानि काशदत ठाग्र তোর দেখা নাহি পায় মান তাই প্রভাতের আলে। এমন কতনা প্রাতে চাহিয়া আকাশ পাতে कड लांक (कलाई ,चिःशंज,

শে সব প্রভাত গেছে তা'রা তার সাথে গেছে लस्य (शस्ट समय-इंजान। এমন কত.না আশা কত শ্লান ভালবাসা श्रीकिषिन পড়িছে ঝরিয়া, তাদের হানয় ব্যথা তাদের মরণ-গাথা কে গাইছে একতা করিয়া। পরস্পর পরস্পরে ভাকিতেছে নাম ধরে क्ट डाहा डिनिट ना शाय। कार्छ जारम यरम शारम, उत्उ कथा ना जारव अञ्चल कित्र कित्र यात्र। চায় ত্রু নাহি পায় व्यवत्नरम् नाशि हात्र, ष्यवत्नंदय नाष्ट्रि भाग गान,

शीरत शीरत भूना हिन्ना वरनत ছात्रात्र शिन्ना प्रक जारम" मजन नग्नान।

শরতের শুক্তারা।

धकामनी तजनी

(পाश्व भीदत्र भीदत्र ;—

রাঙা মেঘ দীড়ায়

উষারে খিরে।

ক্ষীণচাঁদ নভের

व्यापादन त्यटक ठाम्र,—

भायथारन माँ फुरिय

किनात्रा नाहि शाम।

বড় শ্লান হয়েছে

ठाँदात्र मूथथानि,

আপনাতে আপনি

यिनाद्य अञ्चानि।

ट्य (एक एक छहे

এসেছে তার কাছে,—

७कणात्रा ठाँदमत्र,

मूर्क्ट कट्य काट्ड

শরি শরি কে তুমি

क्रिशानि थ्रीन,

कि ना-कानि धरनष्ट

टिएय (पथ आकारण

আর ত কৈহ নাই,

তারা যত গিয়েছে

যে যার নিজ ঠাই।

দাথীহারা চন্দ্রমা

হেরিছে চারিধার,

শ্ন্য আহা নিশির

বাসর ঘর তার !

শরতের প্রভাতে

विमल मूथ निरम

जूमि , ७४ तरमङ

नियदम माज्येहरम ।

ও হয়ত দেখিতে

त्थान स्थ कात !

ও হয়ত আপন

স্বপনে আছে ভোর!

ও হয়ত তারার

খেলার গান গায়,

ও হয়ত বিরাগে

উদাদী হতে চায়!

ও কেবল নিশির

হাসির অবশেষ!

ও কেবল অতীত

স্থের স্বতিলেশ !

ক্রতপদে তাহারা

कार्थाय **ह** जिल्ला क

मार्थ (यर् भारतिन

পিছনে পড়ে আছে!

কত দিন•উঠেছ

নিশির শেষাশেষ,

দেথিয়াছ চাঁদেতে

তারাতে মেশামেশি।

इरे मख ठारिया

আবার চলে যেতে,

মুখখানি লুকাতে

উষার আঁচলেতে।

পুরবের একান্ডে

এক্টু मिस्र मिथा,

কি ভাবিয়া তথনি

ফিরিতে একা একা।

আজ তুমি দেখেছ

চাঁদের কেহ নাই,

স্নেহ্ময়ি, আপনি

এদেছ তুমি তাই!

टमश्थानि मिलाग्र

মিলায় বুঝি তার!

হাসিটুকু রহে না

त्रदश्ना वृत्यि आतः

ত্ই দণ্ড পরে ত

त्रत्व नी किছू शंग !

কোপা তুমি, কোপায়

ठाँ पित्र की १ का ये !

কোলাহল তুলিয়া

গরবে আদে দিন,

হুটি ক্লোট প্রাণের

णिथन श्रव नीन।

স্থু শ্রমে মলিন

नवर्थ्यम मिलादव

কাহার রবে মনে!

कांडालिनौ

আনন্দময়ীর আগমনে, व्यानत्म शिरम्रष्ट (मण (ছरम्। হের ওই ধনীর ত্য়ারে मैं पारेश कां शिनी भारत উৎসবের হাসি-কোলাহল শুনিতে পেয়েছে ভোর বেলা, নিরানন্দ গৃহ তেয়াগিয়া তাই আজ বাহির হইয়া আসিয়াছে ধনীর হুয়ারে मिथिवादा ञानत्मत (थला। বাজিতেছে উৎসবে বাশী ফানে তাই পশিতেছে আদি, মান চোখে তাই ভাগিতেছে ত্রাশার স্থথের স্বপন ও ठांत्रि मिटक् थांडाएउत्र पारमा नग्रत लिशिष्ट्रं वफ काला,

चाकाटणटङ स्मरवत्र माबादत्र শরতের কনক তপন। কত কেঁষে আদে, কত খায়, • কেহ হাসে, কেহ গান পায়, কত বরণের বেশ ভূষা— ঝলকিছে কাঞ্চন-রতন,— কত পরিজন দাস দাসী, পুষ্প পাতা কত রাশি রাশি, চোথের উপরে পড়িতেছে মরীচিকা-ছবির মতন! হের তাই রহিয়াছে চেয়ে **भूनायना** कांडानिनी त्यरय।

खरने एक एक प्रतिक कार्य कार्य

তাই বৃঝি অাথি ছলছল,
বান্পে ঢাকা নয়নের তারা!
চেয়ে ষেন মার মুখ পানে
বালিকা কাতর অভিমানে
বলে,—"মা গো এ কেমন ধারা!
এত বানী, এত হাসিরানি,
এত তোর রতন-ভূষণ,
তুই যদি আমার জননী,
মোর কেন মলিন বসন!"

ছোট ছোট ছেলে মেয়েগুলি
ভাই বোন করি গলাগলি,
অঙ্গনেতে নাচিতেছে ওই;
বালিকা ছ্য়ারে হাক দিয়ে,
ভাদের হেরিছে দাঁড়াইয়ে,
ভাবিতেছে নিশ্বাস ফেলিয়ে
আমি ত ওদের কেহ নই!

শেষ ক'রে আমার জননী
পরায়ে ত দেয়নি বসন,
প্রভাতে কোলেতে ক'রে নিয়ে
মুছায়ে ত দেয়নি নয়ন!"

আপনার ভাই নৈই ব'লে

থরে কিরে ডাকিবে না কেহ!

আর কারো জননী আসিয়া

ওরে কি রে করিবে না স্নেহ!

ওকি শুধু গুয়ার ধরিয়া
উৎসবের পানে রবে চেয়ে,
শৃশুমনা কাঙালিনী মেয়ে!

ওর প্রাণ অাধার যথন
করণ শুনায় বড় বাঁশী,
হুয়ারেতে সজল নয়ন
এ বড় নিষ্ঠুর হাসিরাশি!
আজি এই উৎসবের দিনে
কত শোক ফেলৈ অশ্রধার,

श्र्य त्नरे, त्यर त्नरे, आंश्र, সংসারেতে কেহ নেই তার ! **ग्नाशां के शंह साम दिश्** ছেলেরা ছুটিয়া আদে কাছে, কি দিবে কিছুই নেই তার চোথে শুধু অশ্ৰ-জল আছে ! अनाथा (ছल्टाद काल निवि জননীরা আয় তোরা সব, মাতৃহারা মা থদি না পায় তবে আজ কিসের উৎসব ! षादत यिन थादक माँ ज़ारेया भ्रानभूथ वियारि वित्रम,— তবে মিছে সহকার শাখা লেবে মিছে মঙ্গল কলস !

ভবিষ্ণতের রঙ্গভূমি।

সম্বুথে র'মেছে পড়ি যুগ-যুগাস্তর। षत्रीय नीलिय नूर्छ धत्रशी धारेट्य ছूटि, প্রতিদিন আসিবে, যাইবে রবিকর। প্রতিদিন প্রভাতে জাগিবে নরনারী, প্রতি সন্ধ্যা প্রাপ্ত দেহে कितिश क्योमिटव (शटह, প্রতিরাত্তে তারকা ফুটিবে সারি সারি। কত আনন্দের ছবি, কত স্থথ আশা, তাসিবে যাইবে, হায়, স্থ্থ-স্থপনের প্রায় कठ প্রাণে জাগিবে, মিলাবে ভালবাসা। তথনো ফুটিবে হেলে কুস্থম কানন, **७थरनो** द्रि क्छ लिएक क्ष्र विश्व हक्षार्टिक चाँकित्व चाक्षां अन्ति ख्राथत ख्राभन

নিবিলে দিনের আলো, সন্ধ্যা হলে, নিতি
বিরহী নদীর ধারে
না-জানি ভাবিবে কা'রে!
না-জানি সে কি কাহিনী—কৈ স্থ—কি স্থতি

দ্র হতে আসিতেছে—শুন কান পেতে—
কত গান, সেই মহা-রঙ্গভূমি হতে!
কত যৌবনের হাসি,
কত উৎসবের বাশী,
তরঙ্গের কলধ্বনি প্রমোদের স্রোতে!
কত মিলনের গীত, বিরহের বাস,
তুলেছে মর্ম্মর তান বসম্ব-বাতাস,
সংসারের কোলহিল
ভেদ করি অবিরল
লক্ষ নব কবি ঢালে প্রাণের উচ্ছ্বাস!

७ই দূর (थनाम्नद्धत (थनार्थे) ह का'ता! উঠেছে মাথার পুরে আমাদেরি তারা।

षाभारति क्लखन त्मथा अ नाहि' एक इनि, আমাদেরি পাখীগুলি গেরে হল সারা! **७२ पृत (थलाघदत कदत आनारगाना,** शास्त्र कैंग्लिक कि एक एवं नाहि योष भेगा ! অংশাদের পানে, হায়, ভূলেও ত নাহি চায়, মোদের ওরা ত কেউ ভাই বলিবে না। उरे नव मधूमूथ अमृज-नमन, ना जानि রে আর কা'রা করিবে চুম্বন! সরমম্মীর পাশে বিজড়িত আধ-ভাষে আমরা ত গুনাব না প্রাণের বেদন!

व्यागारमत्र' (थनाचरत का'ता (थनाचेष्ट! मात्र ना इटेट (थना क'ता वस ना देवा, वस वस (काथा क्याचेष्ट! भूमित स्म चत्र एक काथा क्याचेष्ट!

হোথা, যেথা বসিতাম মোরা ছই জন, হাসিয়া কাঁদিয়া হত মধুর মিলন,

মাটীতে কাটিয়া রেখা

কত লিখিতাম লেখা,

क তোরা মুছিলি সেই সাধের লিখন!

ञ्चधामग्री भाषा है स्मार्थि एक द्राधाम मूर्णिक,

চুমো থেলে হাসিটুকু ফুটিয়া উঠিত!

তাই রে মাধবীলতা

মাথা তুলেছিল হোথা;

ভেবেছিমু চিরদিন রবে মুকুলিত।

কোথায় রে—কে তাহারে করিলি দলিত!

७३ (य एकान कून हूँ ए क्लि मिल,

উহার মরম কথা বুঝিতে নারিলে।

ও य मिन क्रिंहिन,

भव द्रवि উঠেছिल,

कानन याजियाहिन वज्र असिता!

তোমরা ত জানিবে না উহার কাহিনী!

কবে কোন্ সক্ষেবেলা
ওরে তুলেছিল বালা,
ওরি মাঝে বাজে কোন্ পূর্ববী রাগিণী!
যা'রে দিয়েছিল ওই ফুল উপহার,
কোথায় সে গেছে, চ'লে, সেত নেই আর!
একটু কুস্থমকণা
তা ও নিতে পারিল না,
কেলে রেখে যেতে হল মরণের পার!
কত স্থা, কত ব্যথা,
স্থাের ত্থের কথা
মিশিছে ধূলির সাথে ফুলের মাঝার!

মিছে শোক, মিছে এই বিলাপ কাতর, সমুখে রয়েছে প'ড়ে যুগ যুগান্তর।

यथूत्राय ।

মিশ্রক ফি— একতালা।
বাঁশরী বাজাতে চাহি
বাঁশরী বাজিল কই ?
বিহরিছে সমীরণ,
কুহরিছে পিকগণ,
মথুরার উপবন
কুস্থনে সাজিল ওই।
বাঁশরী বাজাতে চাহি
বাঁশরী বাজিল কই ?

বিকচ বকুল ফুল

দেখে যে হতেছে ভুল,

কোথাকার অলিকুল

শুঞ্জরে কোথায়!

এ নহে কি বৃন্দাবন ?
কোথা সেই চন্দ্রানন,

ওই কি নৃপুর-ধ্বনি
বন-পথে শুনা যায় ?
একা আছি বনে বিন,
পীতধড়া পড়ে খনি,
সোঙরি সে মুখ-শশী
পরাণ মজিল, সই !
বাঁশরী বাজাতে চাহি
বাঁশরী বাজিল কই ?

একবার রাধে রাধে
ভাক্ বাঁশী মনোসাধে,
আজি এ মধুর চাঁদে
মধুর যামিনী ভায়।
কোণা সে বিধুরা বালা,
মলিন মালতী-মালা,
ছদয়ে:বিরহ-জালা
এ নিশি পোহায়, হায়!

কবি যে হল আকুল,
এ কি রে বিধির ভূল!
মথুরায়'কেন ফুল
ফুটেছে আজি লো সই!
বাঁশরী বাজাতে গিয়ে
বাঁশরী বাজিল কই?

বনের ছায়া।

কোথারে তক্তর ছায়া,
বনের শ্যামল স্নেহ!
তট-তক্ত কোলে কোলে
সারাদিন কল রোলে
স্রোত্তিনী যায় চোলে
স্থানুরে সাথের গেহ;
কোথারে তক্তর ছায়া
বনের শ্যামল স্নেহ!

কোথারে স্থনীল দিশে
বনান্ত রয়েছে মিশে,
অনন্তের অনিমিষে
নয়ন নিমেষ-হারা!
দ্র হতে বায় এসে
চলে যার দ্র-দেশে,
গীত গান যায় ভেসে
কোন্ দেশে যার তারা

হাসি, বাঁশি, পরিহাস, বিমল স্থাপের শাস, स्मना-दमर्भी वाद्या यात्र निनीत नेगामन जीदत ह ८कर (थटन, ८कर (माटन, चूमाय ছायात क्लाल, दिना ७४ योश कारन कुलू कुलू निनी नीदत । क्कून कूरफ़ाय (क्श क्ट गीए यानाथानि इ ছায়াতে ছায়ার প্রায় वरम वरम गान भाग, করিতেছে কে কোথায় চুপি চুপি কানাকানি চু

यूर्ण (शंद्ध ह्मश्विन, वाश्विक शिरम्ब ज्ञिन, जाञ्चल श्रम्ब ज्ञिन जाश्वि शाद्ध राज्यक गाम,

কাঁকন থসিয়া গেছে খুঁজিছে গাছের ছার ! বনের মর্শ্যের মাঝে विकारन वांगती वारक, তারি স্থরে মাঝে মাঝে খুঘু ছটি গাৰ পায়। ঝুরু ঝুরু কভ পাভা গাহিছে বনের গাথা, ক্ত না মনের কথা তারি সাথে মিশে যায় ! লতা পাতা কতশত থেলে কাঁপে কত মত, ছোট ছোট আলোহায়া বিকিমিকি বন ছেনে, ভারি সাথে তারি মত थ्यान कछ ছেन स्यस्य !

किथित्र (म खन् खन् ঝর ঝর মরমর, কোথা সে[°] মাথার পরে লতাপাতা থরথর ! किथाय (म ছाया जात्ना, ছেলে यেत्र, (थलाध् नि, কোথা সে ফুলের মাঝে धटनाष्ट्रव शिश्वनि! **किशिदित मत्रल खान,** গভীর আনন্দ গান, অসীম শান্তির মাঝে व्याद्व मार्धत्र श्रंश्, তরুর শীতল ছায়া वरनत भगागन (सर्!

किथांश!

হায়, কোথা যাবে ।

অনস্ত অজানা দেশ, নিতান্ত যে একা তুমি,

পথ কোথা পাবে !

হায়, কোথা যাবে ।

কঠিন বিপুল এ জগৎ,
খ্ঁজে নেয় যে যাহার পথ।
স্বেহের প্তলি তুর্মি সহসা অসীমে গিয়ে
কার মুথে চাবে!
হায় কোথা যাবে!

মোরা কেহ সাথে রহিব না,
মোরা কেহ কথা কহিব না।
নিমেষ যেমনি যাবে, আমাদের ভালবাসা
আর নাহি পাবে।
হার কোথা যাবে!

মোরা বদে কাঁদিব হেথার,
শ্ন্যে চেয়ে ডাকিব তোমার;
মহা সে বিজন মাঝে হয় ত বিলাপধ্বনি
মাঝে মাঝে শুনিবারে পাবে,
হায়, কোথা যাবে!

দেখ, এই ফ্টিয়াছে ফ্ল,
বসস্তেরে করিছে আকুল;
পুরান' স্থথের স্থতি বাতাস আনিছে নিতি
কত স্নেহ ভাবে,
হায়, কোথা যাবে!

ধেলা গ্লা পড়ে না কি মনে,
কৃত কথা সেহের সরণে!
স্থাথে ত্থে শত ফেরে সে কথা কড়িত যে রে,
শেও কি স্রাবে!
হার, কোখা যাবে!

চির দিন তরে হবে পর!

এ ঘর রবে না তব ঘর!

যারা ওই কোলে যেত, তারাও, পরের মত!

বারেক ফিরেও নাহি চাবে!

হায় কোণা যাবে!

হায় কোথা যাবে!

যাবে যদি, যাও যাও, অশ্রু তবে মুছে যাও,

এইথানে ছঃখ রেখে যাও!

যে বিশ্রাম চেয়েছিলৈ, তাই যেন সেথা মিলে,

আরামে ঘুমাও!

যাবে যদি, যাও!

भाउ।

থাক্ থাক্ চুপ কর্ তোরা,
ও আমার ঘ্মিয়ে পড়েছে!
আবার্ যদি জেগে ওঠে বাছা
কারা দেখে কারা পাবে যে!
কত হাসি হেসে গেছে ও,
মছে গেছে কত অশ্রধার,
হেসে কেঁদে আজ ঘুমোলো,
ভরে তোরা কাঁদাসুনে আর!

কত রাত গিয়েছিল হায়,
বয়েছিল বসস্তের বায়,
প্বের জানালা থানি দিয়ে
চক্রালোক পড়েছিল গায়;
কত রাত গিয়েছিল হায়,
দ্র হতে বেজেছিল বাঁশি,
স্বস্থলি কেঁদে ফিয়েছিল
বিছানার কাছে কাছে জাসি!

কত রাত গিয়েছিল হায় কোলেতে গুকান' ফুলমালা নত মুখে উলটি পালটি टिय टिय किंगि विन योग! কতদিন ভোরে, শুকতারা উঠেছিল ওর অাঁখি পরে, স্থ্যুথের কুস্থম কাননে ফুল ফুটেছিল থরে থরে। **अक्**षि (ছেলে इत को ला नित्र বলেছিল সোহাগের ভাষা, कारत्र वा जानरवरमिन, পেয়েছিল কারো ভালবাসা! ट्रिंग ट्रिंग गंगांगिन कर्त्र (थलिছिन योशांत्र निरम्, আজো তারা ওই খেলা করে, अत्र स्थला शिरम्रष्ट् कृतिरम्! त्रहे दुवि উঠেছে मकारण. कृटिष्टि अपूर्थ (पर्वे क्व,

ख कथन (थलाटि (थलाटि भावशादन चूमिरम जाकूल! खांख (परं, निम्लेक नम्नन, क्टल (शह्ह क्षमम दिपना। कूल शहर क्रमम दिपना। कूल करत किरम (पथ खरत— थाम' थाम' हम ना, (कॅम ना

भाषानी मा।

८ थदनी, जीटवद जननी, श्वरनिছ (य या তোমার ৰলে, **ত**বে কেন ভোর কোলে সবে **८कॅटम** चारम 'टकॅटम यात्र टाटन ! তবে কেন তোর কোলে এসে अञ्चादनत्र (यटि ना शिशामा ! (कन ठाय—(कन कांटम जटन, **किन (केंट्रेंग शांत्र ना जानवांशा टकन दर्श भाषांग भन्नांग, टकन मटव नीत्रम निर्हत** ! (कॅरम (कॅरम ज्यादन रय जारम क्न जादा क्दा (मग्र पूत्र ! कैंा मित्रा (य किट्त ठटन यात्र, তার তরে কাঁদিদ্নে কেহ! धरे कि, या, जननीत थान, धरि कि, या, जननीत 'त्रर!

श्नदग्नत ভाषा।

श्रुप्त, (क्न श्री भारत इनि मञ्ज, আপনার ভাষা তুমি শিথাও আমায়! প্রত্যহ আকুল কণ্ঠে গাহিতেছি কত, ভগ্ন বাঁশরীতে খাদ করে হাম হায়! मक्राकारण त्नरम याग्र नीत्रव ज्यन স্নীল আকাশ হতে স্নীল সাগরে। ष्यायात्र यत्नत्र कथा, প্राप्ति अभन ভাদিয়া উঠিছে যেন আকাশের পরে। थ्वनिष्ट मन्त्रात्र मात्य कात्र माख वानी, ও কিরে আমারি গান ? ভাবিতেছি তাই প্রাণের যে কথাগুলি আমি নাহি জানি, (म कथा (कमन करत्र क्लान्टि मवारे! त्यांत श्रमत्यत्र शान मकत्वरे शाय, গাহিতে পারিনে তাহা আমি শুধু হায়!

विदिननी कुटले राष्ट्र

(SHELLEY)

মধুর স্বা্রের আলো, আকাশ বিমল, সঘনে উঠিছে নাচি তরঙ্গ উজ্জ্বল। মধ্যাহের স্বচ্ছ করে সাজিয়াছে থরে থরে क्ष नौल दी १ छिन, ७ ५- देनन-नित्र ; कानरन कूँ फ़िरत चित्रि,

পড়িতেছে ধীরি ধীরি পৃথিবীর অতি মৃত্ নিঃশ্বাস সমীর। একই আনন্দে যেন গায় শত প্রাণ; বাতাদের গান আর পাথীদের গান,

সাগরের জলরব

नगरतत कलत्रव

এসেছে কোমল হ'য়ে স্তৰতার সঙ্গীত সমান।

व्यामि (मृथि एक इंटिश मम्द्रुपत करन देनवान विठिज्यवर्श छात्म मत्न मत्न। আমি দেখিতেছি চেয়ে,

উপকুল পানে ধেয়ে

মুঠি মুঠি তার্রাবৃষ্টি করে চেউগুলি!

বিরলে বালুকা তীরে

একা বসে রয়েছি রে,

চারিদিকে চমকিছে জলের বিজুলী!

তালে তালে চেউগুলি করিছে উখান,

তাই হতে উঠিতেতে কি একটি তান!

মধুর ভাবের ভরে,

হদয় কেমন করে

মামার সে ভাব আজি বুঝিবে কি আর কোন প্রাণ

হায় মোর নাই আশা, নাইক আরাম, ভিতরে নাইক শান্তি বাহিরে বিরাম। নাই সে সন্তোষ ধন— জানী ঋষি যোগীগণ, ধ্যান সাধনায় যাহা পায় করতলে; আনন্দ মগন মন

করে তারা বিচরণ

বিমল মহিমালোক অন্তরে ত জলে।

নাই যশ, নাই প্রেম, নাই অবসর;

পূর্ণ করে আছে এরা সকলেরি ঘর,

স্থে তারা হাসে খেলে,

স্থের জীবন বলে,

আমার কপালে বিধি লিখিয়াছে আরেক অক্ষর।

8

কিন্ত নিরাশাও শান্ত হয়েছে এমন,
যেমন বাতাস এই, সলিল যেমন।
মনে হয় মাথা থুয়ে
এইথানে থাকি শুয়ে
অতিশয় শ্রান্তকায় শিশুটির মত,
কাঁদিয়া ছঃখের প্রাণ
ক'রে দিই অবসান,
যে হৃঃখ বহিতে হবে বহিয়াছি কত!

আসিবে খুমের মত মরণের কোল,
ধীরে ধীরে হিম হয়ে আসিবে কপোল।
মুমুর্ শ্রুবণ তলে
মিশাইবে পলে পলে
সাগরের অবিরাম একতান অস্তিম কল্লোল!

विरामी कृत्वत छछ।

(MRS. BROWNING.)

সারাদিন গিয়েছিয়ু বুনে,
ফুলগুলি তুলেছি যতনে।
প্রাতে মধুপানে রত
মুগ্ধ মধুপের মত
গান গাহিয়াছি আনমনে!

এখন চাহিয়া দেখি, হায়,
ফুলগুলি শুকায় শুকায়!
যত চাপিলাম মুঠি
পাপ্ডিগুলি গেল টুটি,
কান্না ওঠে, গান থেমে যায়।

কি বলিছ সখা হে আমার,
ফল নিতে যাব কি আবার!
থাক্ বঁধু, থাক্ থাক্,
আর কেই যার যাক্,
আমি, প্রাধানা কড় আর!

काष् ७ (कांगन।

শ্রাস্ত এ হাদয় অতি দীন,
পরাণ হয়েছে বলহীন।
ফুলগুলি মুঠা ভরি
মুঠায় রহিবে মরি,
আমি না মরিব মৃত দিন!

विरामी क्लात छष्ट।

(ERNEST MYERS)

আমায় রেখ না ধ'রে আর,
আর হেথা ফুল নাহি ফুটে।
হেমন্তের পজিছে নীহার,
আমায় রেখনা ধ'রে আর।
যাই হেথা হতে যাই উঠে,
আমার স্থপন গেছে টুটে।
কঠিন পাষাণ পথে
বেতে হবে কোন মতে
পা দিয়েছি যবে!
এক্টি বসন্ত রাতে
ছিলে তুমি মোর সাথে,
পোহাল ত, চলে যাও তবে!

(AUBREY DE VERE)

প্রভাতে একটি দীর্ঘর্যাদ;
ত্বৈকটি বিরল অশ্রবারি
ধীরে ওঠে, ধীরে ঝ'রে যায়;
ভানিলে তোমার নাম আজ,
কেবল এক্টুখানি লাজ—
এই ভুধু বাকি আছে হায়!
আর সব পেয়েছে বিনাশ!
এককালে ছিল যে আমারি,
গেছে আজ করি পরিহাদ!

(AUGUSTA WEBSTER.)

-গোলাপ হাসিয়া বলে, "আগে বৃষ্টি যাক্ চ'লে,
দিক্ দেখা তরুণ তপন,
তথন ফুটাব এ যৌবন!"
গেল মেঘ, এল উষা, আকাশের আঁখি হতে
মুছে দিল বৃষ্টি বারি কণা।
সেত রহিল না!

কোকিল ভাবিছে মনে, "শীত যাবে কতক্ষণে, গাছপালা ছাইবে মুকুলে, তথন গাহিব মন খুলে!" কুয়াশা কাটিয়া যায়—বসন্ত হাসিয়া চায়, কানন কুস্থমে ভ'রে গেল। সে যে ম'রে গেল! (IBID.)

এত শীঘ ফুটিলি কেনরে!
ফুটিলে পড়িতে হয় ঝ'রে;
মুকুলের দিন আছে তবু,
ফোটা ফুল ফোটেনাত আর!!
বড় শীঘ গেলি মধুমাদ,
ফুদিনেই ফুরাল নিশ্বাদ!
বসন্ত আবার আদে বটে,
গেল যে সে ফেরে না আনার!

(P. B. MARSTON.)

হাসির সময় বড় নেই, ছদণ্ডের তরে গান গাওঁয়া; नित्यद्यत गांत्य हूम त्थत्य মুহুর্তে ফুরাবে, চুম থাওয়া! বেলা নাই শেষ করিবারে ष्यमण्यूर्व (প্रयात मखना ; ত্বখন্বপ্ন পলকে ফুরায়, তার পরে,জাগ্রত যন্ত্রণা! কিছুক্ষণ কথা ক'য়ে লও, তাড়াতাড়ি দেখে লও মুথ; ত্দণ্ডের খোঁজ দেখাণ্ডনা, ফুরাইবে খুঁজিবার স্থ। दिना नार्रे कथा कहिवादत যে কথা কহিতে ফাটে প্রাণ; দেবতারে হুট কথা বলে প্রজার সময় অবসান !

अ**ं** ७ कामन।

কাঁদিতে রয়েছে দীর্ঘদিন,
জীবন করিতে মরুময়,
ভাবিতে রয়েছে চিরকাল,
থুমাইতে অনস্ত সময়!

(VICTOR HUGO.)

(वॅटि हिन, (श्रम (श्रम, থেলা ক'রে বেড়াত সে, হে প্রকৃতি, তারে নিয়ে কি হ'ল' তোমার! শত রঙ্-করা' পাথী তোর কাছে ছিল নাকি! কত তারা, বন, সিন্ধু, আকাশ অপার। জननीत कोन श्रांच किन ज्या किए निनि! नूकार्य धर्तात कार्रेन कून मिर्य एएक मिनि! শত-তারা-পুষ্পময়ি! মহতী প্রকৃতি অগ্নি, ना-रम् এकि भिष्ण निनि চুরি क'রে— অদীম ঐশ্বৰ্য্য তব

ন্তন আনন্দ কণা মিলিল কি ওরে! অথচ তোমারি মত বিশাল মায়ের হিয়া, লব শুনা হয়ে গেল একটি সে শিশু গিয়া!

তাহে কি বাড়িল নব!

(MOORE.)

নিদাঘের শেষ গোলাপ কুস্থম

একা বন আলো করিয়া;
রপসী তাহার সহচরীপণ
শুকায়ে পড়েছে ঝরিয়া।
একাকিনী আহা, চারিদিকে তার
কোন ফুল নাহি বিকাশে,
হাসিতে তাহার মিশাইতে হাসি
নিশাস তাহার নিশাসে।

বোটার উপরে শুকাইতে তোরে
রাখিব না একা ফেলিয়া,
স্বাই ঘুমায়, তুইও ঘুমা'গে'
তাহাদের সাথে মিলিয়া।
ছড়ায়ে দিলাম দলগুলি তোর
কুস্থম-সমাধি-শয়নে,
থেথা তোঁর বন-স্থীরা স্বাই
ঘুমার্য মৃদ্তি নয়নে।

তেমনি আমার স্থারা যথন

যেতেছেন মোরে ফেলিয়া,
প্রেমহার হতে একটি একটি
রতন পড়িছে খুলিয়া,
প্রায়ী হৃদয় গেল গো শুকারে
প্রিয়জন গেল চলিয়া,
তবে এ আধার আধার জগতে
রহিব বল কি বলিয়া!

(MRS. BROWNING.)

ওই আদরের নামে ডেকো সথা মোরে, ছেলে বেলা ওই নামে আমায় ডাকিত, তাড়াতাড়ি থেলাধূলো সব ত্যাগ করে

অমনি যেতেম ছুটে
কোলে পড়িতাম লুটে,
রাশি-করা ফুলগুলি পড়িয়া থাকিত।
নীরব হইয়া গেছে সে স্নেহের স্বর,

কেবল স্তন্ধতা রাজে

আজি এ শ্বশান মাঝে,
কেবল ডাকি গো আমি ঈশ্বন—ঈশ্বন—।

মৃত কঠে আর যাহা শুনিতে না পাই,
সে নাম তোমারি মুখে শুনিবারে চাই।

হাঁ স্থা, ডাকিও তুমি সেই নাম ধোরে,

ডাকিলেই সাড়া পাবে,

কিছু না বিলম্ব হবে, তথনি কাছেতে যাব সব ত্যাগ কোরে !

(CHRISTINA ROSSETTI.)

কেমনে কি হল পারিনে বলিতে
এইটুকু শুধু জানি—
নবীন কিরণে ভাসিছে সে দিন
প্রভাতের তর্থানি।
বসস্ত তথনো কিশোর কুমার,
কুঁড়ি উঠে নাই ফুটি,
শাখায় শাখায় বিহগ বিহগী
বসে আগছে হুটি হুটি।

কিযে হয়ে গেল পারিনে বলিতে, এই টুকু শুধু জানি— বসস্তও গেল তা'ও চলে গেল এক্টি না কয়ে বাণী। ষা-কিছু মধুর সব ফুরাইল, সেও হল অবসান, আমারেই শুধু ফেলৈ রেখে গেল স্থাহীন শ্রিয়ানা!

(SWINBURNE.)

রবির কিরণ হতে আড়াল করিয়া রেথে
মনটি আমার আমি গোলাপে রাখিয় ঢেকে;
সে বিছানা স্থকোমল, বিমল নীহার চেয়ে,
তারি মাঝে মন থানি রাখিলাম লুকাইয়ে!
এক্টি ফুল না নড়ে, এক্টি পাতা না পড়ে,
তবু কেন ঘুমায় না, চমকি চমকি চায় ?
ঘুম কেন পাথা নেড়ে উড়িয়ে পালিয়ে যায় ?
আর কিছু নয়, শুধু গোপনে একটি পাথী
কোথা হতে মাঝে মাঝে উঠিতেছে ডাকি ডাকি!

যুমা তুই, ওই দেখ্ বাতাস মুদেছে পাথা,
রবির কিরণ হতে পাতায় আছিস্ ঢাকা;
ঘুমা তুই, ওই দেখ্, তো চেয়ে হরস্ত বায়
ঘুমেতে সাগর পরে ঢুলে পড়ে পায় পায়;
হথের কাঁটায় কিরে বিধিতেছে কলেবর?
বিষাদের বিষ্টাতে কিরিছে কি জরজর?
কেন তবে ঘুম তোর ছাড়িয়া সিয়াছে অ'বি?
কে জানে গোপনে কোথা ডাকিছে একটি পাখী!

শ্যামল কানন এই মোহমন্ত্র জালে ঢাকা,
অমৃত-মধুর ফল ভরিয়ে রয়েছে শাখা;
অপনের পাথীগুলি চঞ্চল ডানাটি তুলি
উড়িয়া চলিয়া যায় আঁগার প্রান্তর পরে;
গাছের শিখর হতে ঘুমের সঙ্গীত ঝরে।
নিভ্ত কানন পর শুনিনা ব্যাধের স্বর
তবে কেন এ হরিণী চমকায় থাকি থাকি!
কে জানে, গোপনে কোথা ডাকিছে একটি পাখী।

(CHRISTINA ROSSETTI.)

দেখিমু যে এক আশার স্বপন
শুধু তা স্বপন, স্বপনময়,
স্বপন বই সে কিছুই নয়!
অবশ হৃদয় অবসাদময়
হারাইয়া স্থুখ প্রান্ত অতিশয়
আজিকে উঠিমু জাগি
কেবল একটি স্বপন লাগি!

বীণাটি আমার নীরব হইয়া
গৈছে গীত গান ভূলি,
ছিঁড়িয়া টুটিয়া ফেলেছি তাহার
একে একে তারগুলি।
নীরব হইয়া রয়েছে পড়িয়া
স্থ্র শ্রশান পরে,
কেবল একটি স্বপর্ন তরে!

থাম্থাম্ ওরে হৃদয় আমার,
থাম্থাম্ একেবারে,
নিতান্তই যদি টুটিয়া পড়িবি
একেবারে ভেঙ্গে যা'রে—
এই তোর কাছে মাগি!
আমার জগৎ, আমার হৃদয়
আগে যাহা ছিল এখন্ তা নয়
কেবল একটি স্থপন লাগি!

(HOOD)

नरह नरह, ध नरह यत्र ! সহসা এ প্রাণপূর্ণ নিশ্বাস বাতাস नीतरव करत रय शनायन, আলোতে ফুটায় আলো এই আঁথি তারা निद्य यात्र अकृषा निभीद्य, বহেনা রুধির নদী,—স্থকোমল তমু धृलांग्र भिलांग्र धत्रशैटक, ভাবনা মিলায় শূন্যে, মৃত্তিকার তলে রুদ্ধ হয় অমর হৃদয়— কিন্তু বে পবিত্র শোক যায় না যে দিন পিরিতির স্মিরিতি মন্দিরে, উপেক্ষিত অতীতের সমাধির পরে ज्नताङ्ग দোলে धीत्र धीत्र। মরণ-অতীত চির-নূতন পরাণ श्रवण करत्र ना विष्ठत्रण, त्मरे वर्षे (मरे ज्यत्रा !

(কোন জাপানী কবিতার ইংরাজী অনুবাদ হইতে)

বাতাসে অশথ পাতা পড়িছে থসিয়া,
বাতাসেতে দেবদাক উঠিছে শ্বসিয়া।
দিবসের পরে বসি রাত্রি মুদে অাথি,
নীড়েতে বসিয়া যেন পাহাড়ের পাথী।
শ্রান্ত পদে ভ্রমি আমি নগরে নগরে,
বিজন অরণ্য, দিয়া পর্বতে সাগরে;
উড়িয়া গিয়াছে সেই পাথীটি আমার,
থুঁজিয়া বেড়াই তারে সকল সংসার!
দিন রাত্রি চলিয়াছি—শুধু চলিয়াছি—
ভূলে যেতে ভূলিয়া গিয়াছি!

আমি যত চলিতেছি রৌদ্র বৃষ্টি বায়ে হৃদয় আমার তত পড়িছে পিছায়ে! হৃদয় রে ছাড়াছাড়ি হল তোর, সাথে, একভাব রহিল না তোমাতে, আমাতে। নীড় বেঁধেছিল্ল যেথা যা' রে সেইথানে,
একবার ডাক্ গিয়ে আকুল পরাণে।
কে জানে, হতেও পারে, সে নীড়ের কাছে
হয়ত পাথীটি মোর লুকাইয়ে আছে!
কেঁদে কেঁদে বৃষ্টি জলে আমি ভ্রমিতেছি,
ভূলে যেতে ভূলিয়ে গিয়েছি!

দেশের স্বাই জানে কাহিনী আমার;
বলে তা'রা "এত প্রেম আছে বা কাহার!
পাথী সে পালায়ে গেছে কথাট না বলে,
এমন ত স্ব পাথী উড়ে যায় চলে;
চিরদিন তারা কভু থাকে না স্মান,
এমন ত কত শত রয়েছে প্রমাণ।
ডাকে, আর গায়, আর উড়ে যায় পরে,
এ ছাড়া বল ত তা'রা আর কিবা করে?
পাথী গেল যার, তার এক ছঃথ আছে—
ভূলে যেতে ভূলে সৈ গিয়াছে!"

সারাদিন দেখি আমি উড়িতেছে কাক,
সারারাত শুনি আমি পেচকের ডাক।
চক্র উঠে অন্ত যার পশ্চিম সাগরে;
প্রবে তপন উঠে জলদের স্তরে;
পাতা ঝরে, শুল্র রেণু উড়ে চারিধার,
বসন্ত মুকুল এ কি ? অথবা তৃষার ?
হদর বিদার লই এবে তোর কাছে—
বিলম্ব হইরা গেল—সময় কি আছে ?
শান্ত হ'রে—এক দিন স্থী হবি তবু,
মরণ সে ভূলে ষেতে ভোলে না ত কভু!

विधि भट्ड होशूत् हेशूत् नमी

मित्नत्र व्यात्ना नित्व धन, श्र्यिंग (ডाবে (ডाবে। আকাশ খিরে মেঘ জুটেছে **ठाँदात द्यादि ।** মেৰের উপর মেঘ করেছে, রঙের উপর রঙ। মন্দিরেতে কাঁশর ঘণ্টা বাজ্ল ঠং ঠং। ও পারেতে বিষ্টি এল याश्मा गोছপाना। এ পারেতে মেঘের মাথায় **अक्रमा गा**विक जाना। বাদ্লা হাওয়ায় মনে পড়ে ছেলেবেলার গান— "विष्टि পড়ে টাপুর্ টুপুর্ नमी धन वार्ग।"

षाकाम खूरफ त्यरघत्र त्थना কোথায় বা সীমানা! रमरंग रमर्ग रथरन रयज्ञात কেউ করে না মানা। ফত নতুন ফুলের বনে विष्टि निष्म यात्र ! পলে পলে নতুন খেলা কোথায় ভেবে পায়! মেঘের খেলা দেখে কত (थला পড़ यत्न! কত দিনের মুকোচুরী কত ঘরের কোণে! তারি সঙ্গে মনে পড়ে ছেলেবেলার গান--"विष्ठि পড়ে টাপুর্ টুপুর্. नहीं अन वान।"

यत्न পएए षत्र विषादन गारमञ्ज शिनमूथ, यत्न भर् (यद्य प्रांक अक्षक त्क। বিছানাটির এক্টি পাশে चूमिएय ब्यांट्स त्थांकां, भारत्रत পরে দৌরাত্মি, দে ना योग्न (नथा (कांका । করে দাপাদাপি, বাইরেতে মেঘ ডেকে ওঠে स्षे उठ काशि। यत्न পए यादात मूर्य एटनिছ्टिन्य शीन "विष्ठिः भए । छाश्र् हुश्र् नमी धन वाव।"

मत्न পড़ ऋषात्रांनी ত্যোরাণীর কথা, यत्न পড़ে অভিমানী কন্ধাৰতীর ব্যথা, यत्न পড़ে घरत्रत কোণে यिषियिषि जात्ना, ठातिमिटक दमग्राटणटङ ছाया कारमा कारमा। বাইরে কেবল জলের শব্দ यूश् यूश् यूश्—-मिंग ছেলে गश्र लाति ज्याद्य हुन्। তারি সঙ্গে মনে পড়ে त्यच्ना मित्नत्र गान-"বিষ্টি পড়ে টাপুর্ টুপুর্ नगी ज्य वाव।"

करव विधि भएफ्छिन, वान अन म काथा। निवृठीक् दत्रत्र विदय रन करवकांत्र (म क्था ; সে দিনো কি এম্নিতর (मरचत्र चंडे। थाना १ (थरक (थरक विज्नी कि पिरंजिं हिन श्रांना ? जिन करना विदेश क्'द्र কি হল তার শেষে ! ना कानि कान् नमीत्र शास्त्र, ना खानि कान् (मत्य, रकान् एक्टलदत्र घूम शाषारकः কে গাহিল গান— "বিষ্টি পড়ে টাপুর্ টুপুর नगी अग यांग!

मांज ভाई हंन्था।

সাতটি চাঁপা সাতটি গৰছে, সাতটি চাঁপা ভাই; ताका-वनन शाक्रव निनि, তুলনা তার নাই। <u> শতি</u> সোনা চাঁপার মধ্যে সাতটি সোনা মুথ, भाक्न पिषित्र कि मूथि कर्छिष्ट हेक्हेक्! घूमणि ভাঙ্গে পाथित ডাকে রাতটি যে পোহালো, ভোরের বেলা চাঁপার পড়ে চাঁপার মত আলো। निनित्र मिरत मुथि त्मरक म्थथानि (वत्र कार्त्र, कि प्रथ्रा गांज ভाরেতে गात्रा गक्राण ध'रत

(मथ्टि टिया क्रिना वरन গোলাপ ফোটে ফোটে, পাতায় পাতায় রোদ পড়েছে, দোলা দিয়ে বাতাস পালায় হুষ্টু ছেলের মত, লতায় পাতায় হেলাদোলা (कानांकूनि कछ! গাছটি কাঁপে नদীর ধারে ছाग्राणि काँटिश जलन, ফুলগুলি সব কেঁদে পড়ে निউनि গাছের তলে। क्रुलित (थरक मूथ वां फ़िर्त्र (मथ्रा कारे वान्, **ए**थिनी अक गांद्रित एद्र व्यक्त रग मन।

সারাটা দিন কেঁপে কেঁপে পাতার ঝুক্র ঝুক্র, यरनत्र ऋरथ वरनत्र रयन र्क्त श्रु श्रु ! কেবল छनि कून्क्नू এ কি ঢেউয়ের খেলা! বনের মধ্যে ডাকে ঘুঘু সারা ছপুর বেলা। भागाहि द्रम खन्खनिय খুঁজে বেড়ায় কা'কে, घारमत्र मरधा विंबिं करत विंविं (शाका जाक। ফুলের পাতার মাথা রেখে ७न्ट जारे त्वान, गारंग्रज कथा गतन পড़ णाक्षु करत्र यन।

(यरचत्र शांत्न ८ हरत्र (मर्ष (यय চल्लाइ (खरम, পাথীগুলি উড়ে উড়ে ठटलट्ड दकान् टमटन ! প্রজাপতির বাড়ি কোথায় बाति ना ७ (कर्डे। লক্ষ হাজার ঢেউ ! छ्रात्र (तना (थरक (थरक উদাস হল বায়, শুক্নো পাতা খদে পড়ে काथांत्र উष्ण् यात्र! क्रांवत्र यात्य गात्व राज (मथ्रा छारे त्वान, यारमञ्ज कथा পড़ एक यरन कॅाम्टा थान्यन।

मरक रूल ट्यांनारे बरम পাতায় পাতায়, অশথ গাছে হুটি তারা গাছের মাথায়। বাতাস বওয়া বন্ধ হল, স্তব্ধ পাথীর ডাক, (थटक (थटक कंद्रिट का का इटो अक्टो काक! পশ্চিমেতু बिकिंगिक, পূবে অাধার করে, সাতটি ভাষে গুটিস্থটি **हाँ शा कृ त्वत्र घटत्र ।** "গল্প বল পাৰুল দিদি" সাতটি চাঁপা ডাকে, भाक्तम मिनित्र गद्म खटन यत्न श्रुट्फ मारक।

थरम राज्य, जांज राम्राह, वाँवाँ कदत्र वन, क्रांव प्राप्त प्राप्त न'न व्यापृष्टि छारे द्यान। সাতটি তারা চেয়ে আছে সাভটি চাঁপার বাগে, চাঁদের আলো সাতটি ভারের মুখের পরে লাগে। ফুলের গন্ধ ঘিরে আছে সাত্টি ভায়ের তন্ত্ — (कांभन भगा (क (शरकर সাতটি ফুলের রেণু। ফুলের মধ্যে পাত ভায়েতে अशन (मृद्ध गांदक; मकान दबना "बारगा बारगा" भाक्न मिनि छादक।

शुद्राह्ना वह।

লুটিয়ে পড়ে জটিল জটং, যন পাতার গহন ঘটা, হেথা হোগায় রবির ছটা, পুকুর ধারে বট। দশ দিকেতে ছড়িয়ে শাখা, কঠিন বাছ আঁকাবাঁকা,

শিরে আকাশ পট।
নেবে নেবে গেছে জলে
শিকড় গুলো দলে দলে,
সাপের মন্ত রসাতলে,

স্তব্য আছ আকা,

আলয় থুঁজে মরে।
শতেক শাখা বাহু তুলি,
বাযুর সাথে কোলাকুলি,
আনন্দতে দোলাহুলি,
গভীর প্রেমভরে।

सर्फन्न छोटन नट्फ् माथा, कॅाटन नक्टकां है भाषा, जानन महन गांख गांशा

ছলাও মহাকায়া।
তড়িৎ পাশে উঠে হেসে,
বড়ের মেঘ ঝটিৎ এসে
দাঁড়িয়ে থাকে এলো কেশে,

তলে গভীর ছায়া।

ঝটিকা আদে তোমার কোলে,

তোমার বাস্থ পরে দোলে,
গান গাহে সে উতরোলে,

স্মোলে তবে থামে।
পাতার কাঁকে তারা ফুটে,
পাতার কোলে বাতাস লুটে,
ভাইনে তব প্রভাত উঠে,
সন্ধ্যা টুটে বামে।

निनि-पिनि मैं फ़िरत जाइ याथात्र नदत्र कठे, ছোট ছেলেটি মনে কিপড়ে ওগো প্রাচীন বট ? কতই শাখী তোমার শাখে वरम रय हरन रशहर, ছোট ছেলেরে তাদেরি মত ভুলে কি খেতে আছে ? ভোমার মাুঝে হাদর তারি (वैद्ध हिन त्य नीफ़। ভামার) ডালেপালায় সাধগুলি তার কত করেছে ভিড়। गत्न कि त्नरे मात्रां ि मिन विभिद्य वांजायत्न, ভোমার পানে রইত চেরে , व्यव्यक्त ध्नव्रदम ? তোমার তলে মধুর ছারা ट्यांबाद ज्ला हुए,

(यिन)

(यि)

তোমার ভলে নাচ্ভ বসে मानिथ भाषि इं । ভাঙ্গা'ৰাটে নাইত কারা তুল্ত কারা জল, পুকুরেতে ছায়া তোমার कर्छ छेलभल। ब्दलत উপत दोष भ'ড़েছে त्मानायाया यात्रा, ভেদে বেড়ায় হুটি ইাস ত্তি হাঁসের ছায়া। । (ছाট (ছলে রইত চেয়ে वार्तन' अभार, यत्नत्र यस्या (थनां छात्र কত খেলার সাধ। বাযুর মত থেল্তে পেত ভোমার চারি ভিতে, ছায়ার মত গুতে পেত

তোমার হায়াটতে,

- ধদি) পাধীর মত্-উড়ে থেড উড়ে আস্ত ফিরে,
- যদি) হাঁদের মত ভেদে যেত তোমার তীরে তীরে । নাইচে যারা ভাদের মত নাইতে যেত যদি, জল আন্তে যেত পথে কোথার পঙ্গা নদী! থেল্ত ফেসব ছেলেগুলি ডাক্ত যদি তারে।

मत्न र'ज তোমার ছায়ে

কতই কিষে আছে,

कामের যেন ঘুম পাড়াতে

যুদ্ব ডাক্ত গাছে ।

তাদের সাথে থেশ্ত স্থথে

তাদের ঘরে ঘারে।

মনে হ'ত তোমার মাজে
কাদের কেন ধর।
আমি ইদি তাদের হতেম।
কেন হলেম পর
?

(তারা) ছায়ার মত ছায়ায় থাকে পাতার ঝর ঝরে,

> खन्छनित्र मवाई मिर् क् क् रिय गान क्रत्र !

मूद्र वास्य भूगजानः পড়ে আদে বেলা,

(कांत्रा) चारम वरम रमस्थ करम जारमा हात्रात्र रथमा ।

> मत्का श्ल जून वार्ष जारमन्न स्मरम्थन,

क्ट्रिया गव मानाम वरमः प्राणाम क्रिन क्रिन । अस्म मार्ड म्यिन बार्ड.

নির্ম চারি ভিত,

টাদের আলোর গুত্রতম্ব —
থিনি থিনি গীত।
গুণানতে পাঠশালা নৈই,
পণ্ডিত মশাই,
বৈত হাতে নাইক বদে
মাধব গোঁদাই।
সারাটা দিন ছুটি কেবল,
সারাটা দিন থেলা,
পুকুর ধারে আধার-করা

আত্ত কেন নাইক তারা ?
আছে আর সকলে,
তারা তাদের বাসা ভেকে
কোথার গেছে চলে।
হারার মধ্যে মারা ছিল
ভেকে দিল কে ?.

वर्षे शास्त्र जना।

ছায়া কেবল রৈল পড়ে,
কোথায় গেল সে ?
ডালে বসে পাখীরা আজ
কোন্ প্রাণেতে ডাকে ?
রবির আলো কাদের থোঁজে
পাতার ফাঁকে ফাঁকে ?

গল্প কত ছিল যেন তোমার থোপে থাপে,

পাথীর সঙ্গে মিলে মিলে ছিল চুপেচাপে,—

ত্পুর বেলা নৃপুর তাদের বাজ্ত অমুক্ষণ,

(খনে) ছোট হুটি ভাই ভগিনীর আকুল হ'ত মন।

(আহা) ছেলে বেলায় ছিল তারা, কোথায় গেল শেষে!

(তারা) গেছে ব্বি ঘুমপাড়ানি মাসি পিসির দেশ্রে!

शिन्दां नि।

जात नाम त्रत्थिङ् वाव्या त्राणी, একরন্তি মেয়ে। शिमिथूमि हैं। दिन्द बार्ला মুখটি আছে ছেয়ে। ফুট্ফুটে তার দাঁত ক'থানি शूष्श्रि जात्र हिं। मूर्थत्र मरशु क्था छिन नत् उत्ना भारना है। কচি হাত হ্থানি, কচি কচি মুঠি, मूथ्रनरफ़ रक छे कथा क'रम ट्टिंग्से कृषि कृषि। তाই তাই তাই তালি দিয়ে . ত्रान-ত्रान नरफ, চুলগুলি সব কালো কাৰো मूर्थ जरम शर् ।•

"ठिल-ठिल-भा-भा-छेलि छेलि यात्र, গরবিণী হেদে হেদে वार्ष वार्ष होत्र। হাতটি তুলে চুড়ি গু-গাছি मिथाय गांदक जांदक, হাসির সঙ্গে নেচে নেচে तालक पार्व नारक। রাঙা হটি ঠোটের কাছে मुख्न' चार्ट्स रकारन', यादत्रत्र চूट्याथानि (यन भूक' इत्य (मोटन! व्याकात्मरण काम तमस्थरह ত্হাত তুলে চায়, यारत्रत्र द्वारण घ्रण घ्रण **डाटक कांग्र कांग्र** । ठाँ तित्र स्थि स्पित्र शिन जात्र सूर्थरण क्राय,

ठीम ভাবে কোথেকে এन **हां एत्र यक व्यद्य**! कि खार्णिय शिमिशानि **ठाँदमंत्र शांदम दहादछै**, চাঁদের মুখের হাসি, আরো दिमी कूछि उर्छ। **ध्यम मार्थित्र एकि खरम हाँग** (कमन क'रत्र आएइ, তারাগুলি ফেলে বুঝি (नरम आंभ्रव कार्ड! স্থধা মুখের হাসিথানি চুরি করে নিয়ে, রাতারাতি পালিয়ে যাবে भिर्वे आंक्री मिर्वे । षागन्ना তারে রাধ্ব ধ'रत ব্বাণীর পাশেতে। शिन, त्राणि वांशा त्रदव शंनि श्रामित्छ।

या लक्यो।

কার্ পানে, মা, চেয়ে আছ মেলি হটি করণ আঁথি! কে ছিঁড়েছে ফুলের পাতা, क धरत्रष्ट् वरनत्र शाथी! (क कार्त्र कि वरणहा भी, कांत প्राप्त (वर्ष्क्र वार्था, कक्नाय (य ভরে এল ত্থানি তোর আঁথির পাতা! (थल्टा रथल्टा मार्यत आभात जात त्थि रुग ना (थणा ! ফুলের গুচ্ছ কোলে প'ড়ে (कन मां ७ (श्नारिक्नां! অনেক তৃঃথ আছে হেথায়, এ জগৎ (य श्रः (थे, छत्रो, তোমার হৃটি আঁথির স্থায় জ्ডिम (भग निश्ण भन्ना!

मनी योगात वम् प्रिया शुकिएय छिनि कान् मानदत ! সহসা আজ কাহার পুঞা छिमग्र श्रि त्यांत्मत्र घरत ! मरक क'रत निरंग এनि श्रमत्र-छत्रा त्मरहत्र स्था, श्रमग्र किला भिकित्य यावि এ জগতের প্রেমের কুধা। थारमा, थारमा, अत्र कार्ट्ड करमाना (कडे कर्छात्र कथा, क्रक्रण चौथित वालाई निया क्षि कादा मिखना वाथा ! महेट यिन ना भारत ७, किंदम यनि ठटन यात्र— ध धत्रगीत शायांग खारन क्रानत युष्ठ सरत यात्र ! ওযে আমার শিশির কণা, ७८४ सामात्र गाँटसत्र जाता।

কড়ি ও কোষল। কবে এল, কবে যাবে, এই ভয়েতে হইরে সারা!

ञाकूल ञास्तान।

व्यक्तिमान क'रत काथात्र रागि,
व्यात्र मा किरत, व्यात्र मा किरत व्यात्र !

मिन तां क क्रिंग क्रिंग काणि
व्यात्र मा किरत, व्यात्र मा, किरत व्यात्र !

मरक हन, गृह व्यक्तकांत्र,
मागा, हथात्र व्यक्तिभ व्यक्त ना !

वर्ष्क वर्षक नतां हे घरत वान,
व्यामात्र राग, मा क्ष्म वर्ण ना !

ममत्र ह'न दाँ पर पिन हन,
भित्र पान तां का काभफ़ थानि ।

मास्त्र काता मास्वत्र गगन—

क्षाथात्र राग, तां शी व्यामात्र तांगी !

(ওমা) রাত হ'ল, অাধার করে আদে বরে ঘরে প্রদীপ নিবে যার। আমার ঘরে ঘুম মেইক ওধু— শুন্য শেক শৃত্যপানে চায়ন। কোথায় ছটি নয়ন ঘুমে ভক্না;
(সেই) নেভিয়ে-পড়া ঘুমিয়ে-পড়া মেয়ে !
শ্রম্ভ দেহ চুলে চুলে পড়ে
(তবু) মায়ের ভরে আছে বুঝি চেয়ে !

অাধার রাতে চলে গেলি তুই, অাধার রাতে চুপি চুপি আয়। কেউ ত তোরে দেখতে পাবে না, ভারা শুধু ভারার পানে চায়। পথে কোথাও জন প্রাণী নেই, चद्र चद्र नवारे चूमिए चाहि। मा তোর গুধু এক্লা দারে বনে, চুপি চুপি আয় মা মায়ের কাছে। এ জগৎ কঠিন-কঠিন-कठिन, अधू मारमण व्यक्ति होए।, त्मरेथात्व कुन्ने साम मा शिद्य व्याप्त, **এত ডাকি मिनिएस कि मांडा** ह

गिद्यंत जाना।

क्रानंत्र नित्न (म (य ठान दर्गन, क्न-रकां जो तम तमरथ रमन ना, क्रल क्रल ভরে গেল বন এক্টি সে ত পর্তে পেল না। क्न कार्छ, क्न व'द्र यात्र— कूल निएम आत्र मवाहे भरत्र, कित्र अप्न मि विष्युंग, এক্টিও রবে না তার তরে! তার তরে মা কেবল আছে, षाष्ट्र ७४ जननीत त्यर, चार्छ ७४ मा'त्र चङ्गकन, किছू नारे—नारे जात्र (कर! (थन्ठ यात्रा जात्रा (थन्ट (ग्ट्र, राम् वात्रा जाता जाता राम, তার তরে কেহ ব'সে নেই या ७४ त्राहरू जिति जात्य!

হার, বিধি, এ কি ব্যর্থ হবে!

ব্যর্থ হবে মার ভালবাসা!

কত জনের কত আশা পুরে,

ব্যর্থ হবে মার প্রাণের আশা!

१ व।

শ্রীমতী ইন্দিরা। প্রাণাধিকাস্থ। স্থীমার। খুলনা।

মাগো আমার লক্ষী,
মনিষ্যি না পক্ষী!
এই ছিলেম তরীতে,
কোথার এম হরিতে!
কাল ছিলেম খুলনায়,
তাতে ত আর তুল নাই,
কল্কাতার এসেছি সদ্য,
বসে বসে লিখ্চি পদ্য।

(छारमञ्ज रक्टन माञ्चाहा मिन

श्राहि अम्नि अक्-त्रक्म,

त्थारभ व'रम भाषता रयन

कत्रहि रक्तम वक्त्कम् ।

Ø,

वृष्टि পড়ে টুপুর্ টুপুর্ भिष करत्रष्ट् यौकारम, উধার রাভা মুথথানি গো (क्यन (यन का)कारम ! বাড়িতে যে কেউ কোথা নেই इउत्र खला जाकाता, घरत घरत भूँ एक दिकार चदत्र व्याष्ट्र (क (यन! পক্ষীটি সেই ঝুপ্সি হয়ে বিমচ্চেরে খাঁচাতে, जूरण शिष्ट (निष्ठ (निष्ठ পুচ্ছটি তার নাচাতে! ঘরের কোণে আপন মনে न्ना (পाए विष्ना, कारांत्र তत्त्र (कॅटम मदत्र त्म कथाण मिट्ह ना! वर्षाना नव एषित्य त्थात्ष,

माम् जिथा जान्न कान्न कान्।

থ্দ্বে না কেউ আর গো!
এটা আছে দেটা আছে
অভাব কিছু নেই:
শ্বন ক'রে দেয়রে য়ারে
থাকেনাক সেই ত!

বাগানে ঐ হুটো গাছে

ফুল ফুটছে রাশি রাশি,
ফুলের গন্ধে মনে পড়ে
যা'রে যা'রে ভালবাসি!
ফুলের গন্ধে মনে পড়ে
ফুল কে আমার দিত মেলা,
বিছেনার কার মুখটি দেখে
সকাল হত সকালবেলা!
জল থেকে তুই প্লাস্বি কবে
মাটির লন্ধী মাটিভে

ঠাকুর বাবুর ছয় নম্বর বোড়াদাকোর বাটিতে!

ইষ্টিম্ ঐ রে ফুরিয়ে এল
নাঙর তবে ফেলি অদ্য।
অবিদিত নেইত তোমার
রবিকাকা কুঁড়ের হদ।
আজ্কে না কি মেঘ করেচে
ঠেক্চে কেমন ফাঁকা-ফাঁকা,
তাই থানিকটা ফোঁস্ফোঁসিয়ে
বিদায় হল—

রবি কাকা!

কলিকাতা।

পত্ৰ।

শ্রীমতী ইন্দিরা। প্রাণাধিকাস্থ। স্থানার। খুলনা।

वरम वरम निथ्लम िठि,
श्रिय पिलम होत्र ि शिर्ठ-है,
श्रिय पिलम होत्र ि शिर्ठ-है,
श्रिय मा जोत स्वाव-है,
अस्मि ज्यान स्वावी!

বাছা আমার, দেখতে পেতে এই কলমের ধার ধানা!

তোমার মত এমন মা ত
দেখিনি এ বঙ্গে গো,
মারা দরা থা-কিছু সে

য দিন থাকি সঙ্গে গো!
চোথের আড়াল প্রাণের আড়াল
কেমন তর টং এ গো!
তোমার প্রাণ যে পাষাণ সম
জানি সেটা long ago!

সংসারে যে সবি মারা
সেটা নেহাৎ গল্প না !
বাইরেতে এক ভিতরে এক
এ বেন কার প্ল-পনা !
সত্যি বলে ষেটা দেখি
সেটা থামার কল্পা !

ভেবে একবার দেখ বাছা ফিলজফি অল্প না !

মস্ত এক্টা বৃদ্ধাঙ্গুষ্ঠ
কে রেখেছে সাজিয়ে,

যা করি তা' কেবল ''থোড়া

জমির বাস্তে কাজিয়ে!''
বৃষ্টি পড়ে চিঠি না পাই,

মনটা নিয়ে ততই হাঁপাই,

শৃত্যে চেয়ে ততই ভাবি

সকলি ভোজ-বাজি এ!

ফিলজফি মনের মধ্যে

দূর হোক্ গে, এত কথা
কেনই বলি তোমাকে!
ভরা নায়ে পা দিয়েছ,
আছ তুমি দেখাকে!

ততই ওঠে গাঁজিয়ে !

5.

তোমার দক্ষে আর কথা না,
তুমি এখন লোকটা মস্ত,
কাজ কি বাপু, এই খেনেতেই
রবীজনাথ হলেন অস্ত।

জगणिशत जेशशत।

(এकिं किंदिर वाक्म)

बीय छी दे नित्र। প্রাণাধিকা সু

স্থেহ-উপহার এনেছিরে দিতে

লিখেও এনেছি হ-তিন ছত্তর।

দিতে কত কিযে সাধ ষায় তোরে

দেবার মত নেই জিনিয-পত্তর!

টাকাকড়ি গুলো ট্যাকশালে আছে

ব্যাঙ্কে আছে দব জ্মা,

ठेंगारक चाष्ट्र थानि शांठा इंडिन

এবার কর বাছা ক্ষমা !

হীরে জহরাৎ যত ছিল মোর

পোঁতা ছিল সৰ মাটিতে,

জহরী যে ষেত সন্ধান পেয়ে

নে গেছে যে যার বাটিতে!

छ्नियां नश्त्र खिमात्री त्यांत्र,

পাঁচ ভূতে করে কাড়াঝড়ি,

হাতের কাছেতে যা-কিছু পেলুম, নিয়ে এমু তাই তাড়াতাড়ি!

সেহ যদি ক'ছে রেখে যাওয়া যেত চোখে যদি দেখা ষেতরে,

বাজারে-জিনিষ কিনে নিয়ে এসে বল্ দেখি দিত কে তোরে!

জিনিষটা অতি যৎসামান্য রাখিস্ ঘরের কোণে,

বাক্সথানি ভোরে ক্ষেহ দিন্ত ভোরে এইটে থাকে যেন মনে!

क ज़ क कि कि कि कि विश्व या वि, कान्त्थान त' वि क् कि या,

काका काका मन भूरय-मूट्ड रक्टन मिनि अरकनादत हुकिरय,

তथन् यहित्र এই कार्ठ-थाना

মনে একটুকু তোলে চেউ—
একবার যদি মনে পড়ে তোর

"বুদ্দি" ব'লে বুঝি ছিল কেউ'

•

এই যে সংসারে আছি মোরা সরে এ वर्ष विषय (मणें। काँकिक् कि पिरम पूरत ठ' ला आउ ভূলে যেতে সবার চেষ্টা! ভয়ে ভয়ে তাই সবারে সবাই कछ कि एव अपन मिरक, এটা-ওটা দিয়ে স্মরণ জাগিয়ে दिर्ध রাখিবার ইচ্ছে! वाथ्रा (य भार कार्र कार्र थड़ ठाई, ভূলে যাবার ভারি স্থবিধে, ভালবাদ যা'রে কাছে রাখ্ তারে যাহা পাস্ তারে খুবি দে! বুঝে কাজ নেই এত শত কথা, किल्खिक टाक् हारे! বেঁচে থাক তুমি স্থথে থাক বাছা वानारे नित्र म'द्र यारे।

िठिंग

শ্রীমতী ইন্দিরা। প্রাণাধিকাম। স্থীমার "রাজহংস।" গঙ্গা।

চিঠি লিখ্ব কথা ছিল, দেখ্চি সেটা ভারি শক্ত।

তেমন যদি খবর থাকে

লিখ্তে পারি তক্ত তক্ত।

থবর ব'য়ে বেড়ায় ঘুরে

थवत्र अयोगा याँ का-मूटि।

আমি বাপু ভাবের ভক্ত

বেড়াইনাকো থবর খুঁটে।

এত ধুলো, এত ধ্বর

কল্কাভাটার গলিভে !

নাকে চোকে খবর ঢোকে

ছ্-চার কাম চলিতে।

এত থবর সর্না আমার

मित्र कामि हाँ (शास्त्र ।

घदत अत्मर्थ थव्त खरना मूट्ह (किन शार्शाख। আমাকেত জানই বাছা! আমি একজন খেয়ালি। कथा खरना या' विन, जात অধিকাংশই হেঁয়ালি। আমার যত থবর আসে ভোরের বেলা পূব দিয়ে। পেটের কথা তুলি আমি (পটের মধ্যে ডুব দিয়ে। व्याकान विदय् कान क्लान তারা ধরাই ব্যবসাঃ থাক্গে তোমার পাটের হাটে मथूत कुष्ट्र मितू मा। কল্পতক্র তলায় থাকি नरेला जामि थव्दा। रैं। कतिया काशि

(मश्रम करण मबूदित्र।

তবে যদি নেহাৎ কর थवत्र नित्र छोनाछोनि। व्याभि वाश्र अकृषि (कवन **छ्डे प्रायंत्र थवत कानि**! श्रुभि जात्र त्नान यिन् অবাক হবে সত্যি! এত বড় বড় কথা তার মুখখানি একরতি। यत्न यत्न कात्नन जिनि ভারি মস্ত লোকটা। लांदिक त्र मद्य ना- एक दक्व ঝগড়া কর্বার ঝোঁকটা। আমার সঙ্গেই যত বিবাদ কথায় কথায় আড়ি। এর নাম কি, ভদ্র ব্যাভার ! বড্ড বাড়াবাড়ি। यत्न कदत्रिष्, जात्र मदन

क्षाविधि वस्क्रि।

প্রতিজ্ঞা থাকে না পাছে সেইটে ভারি সন্দ করি।

ति ना श्ल मकाल दिलांग हारमिल कि क्टेर्व!

সে নৈলে কি সম্বে বেলায় সম্বে তারা উঠ্বে।

সে না হলে দিনটা ফাঁকি আগাগোড়াই মস্কারা।

পোড়ারমুখী জানে সেটা তাই এত তার আস্কারা।

চুড়ি-পরা হাত ত্থানি কতই জানে ফন্দি।

কোন মতে তার সাথে তাই করে আছি সন্ধি।

নাম যদি তার জিগেস কর নামটি বলা হবে না।

कि कानि एम त्यांतन यिन প্রাণটি আমার রবে না। নামের থবর কে রাথে তার ডাকি তারে যা খুসি। छ्डे वन मिग्र वन পোড়ারমুথি রাক্ষ্সী ! वाश याद्य त्य नाम पिरव्रदह বাপ মায়েরি থাক্সে। ছिष्टि थूँ एक मिष्टि नामिष्टि जूल त्राथून् वात्यः! এक জনেতে নাম রাখ্বে षम्थानत्। विश्व ऋक रम नाम त्नरव विषय भौजन थ। निष्कद्र मत्नद्र मण नवारे করুক নামকরণ। याया जाकून् "চक्कक्मांत्र"

थूरफ़ा "दायहद्रश"!

ধার-করা নাম নেব আমি
হবে না ত সিটি।

জানই আমার সকল কাজে

Originality।

মরের মেরে তার কি সাজে

সঙ্কত নাম।

এতে কেবল বেড়ে ওঠে

অভিধানের দাম।

আমি বাপু ডেকে বসি

যেটা মুখে আসে,

যারে ডাকি সেই তা বোঝে

আর সকলে হাসে!

হুন্ত মেরের হুন্থ নি—ভার কোথার দেব দাঁড়ি। অক্ল পাথার দেখে শেষে কলমের হাল ছাড়ি!

Ç

শোন বাছা, সত্যি কথা বলি তোমার কাছে— ত্রিজগতে তেম্ন মেয়ে* একটি কেবল আছে! বর্ণিমেটা কারো সঙ্গে মিলে পাছে যায়— তুমুল ব্যাপার উঠ্বে বেধে रू विषय माश ! হপ্তাথানেক বকাবকি ঝগ্ড়াঝাঁটির পালা, এক্টু চিঠি লিখে, শেষে व्यागि यानाकाना। আমি বাপু ভালমানুষ মুথে নেইক রা। चदत्रत्र कोर्प वरम वरम (गाँदिक निष्कि छ।। षाभिरे यज शादन शिष्

छनि नानान् वाकि।।

থোঁড়ার পা যে খানার ণড়ে

আমিই তাহার সাকি।

আমি কারো নাম করিনি

তবু ভয়ে মরি।

তুই পাছে নিস্ গায়ে পেডে

সেইটে বড় ডরি!

কথা এক্টা উঠ্লে মনে

ভারি ভোরা জালাস্।

আমি বাপু আগে থাক্তে

বলে হলুম থালাস্!

श्व। *

স্থদর প্রীযুক্ত প্রিঃ— স্থলচর বরেষু।

कटन वांना (वैरिष्डिटनम, ভাঙ্গায় বড় কিচিমিচি। मवारे भना कारित करत, চেঁচায় কেবল মিছিমিছি। मखा लिथक कािकरम मात्र, छाक निएम एन थानि भिर्दोम, ভদ্রলোকের গামে প'ড়ে कनम (नरफ़ कानि ছिটোয়। এথেনে যে বাস করা দায়, जन्जनानित्र वाकारत । व्याप्ति येप्सा श्रीवास छेर्छ र्षेरगारमञ्ज मार्चाद्य ।

^{* (}नोका यांबा रहेट कित्रिया जानिया निधिछ।)

কানে যখন তালা ধরে

উঠি যখন হাঁপিয়ে।
কোথায় পালাই—কোথায় পালাই—
জলে পড়ি ঝাঁপিয়ে।
গঙ্গা প্রাপ্তির আশা কোরে
গঙ্গা ষাত্রা করেছিলেম।
তোমাদের না ব'লে ক'য়ে
আন্তে আন্তে সরেছিলেম।

হনিয়ার এ মজ্লিষেতে

এসেছিলেম গান শুন্তে;
আপন মনে শুন্গুনিয়ে

রাগ রাগিণীর জাল বুন্তে।
গান শোনে সে কাহার সাধ্যি,
ছোঁড়াগুলো বাজায় বাদ্যি,
বিদ্যেখানা ফাটিয়ে ফেলে
থাকে তারা তুলো ধুন্তে।

(ডक्क वरण, (इंक्क वरण, जिन्नी क'रत (वंदक वदन---'আমার কথা শোন সৰাই গান শোন আর নাই শোন ৮ शांन (य का'रक वरण मिहरि বুৰিয়ে দেব, তাই শোন।" **जि**क्क करत्रन व्याथम करत्रन, জেঁকে ওঠে বজিমে, কে দেখে তার হাত পা-নাড়া, চকু হুটোর রক্তিমে ! ठक र्या जन्त भिष्ट আকাশ থানার চালাতে— তিনি বলেন "আমিই আছি बन्रा वरः बागार ।" কুঞ্জবনের তানপুরোতে স্থর বেঁধেছে বসস্ত, (मिछा खहन नाएफ़न कर्न

र्युनाक छात्र शहल।

তাঁরি স্থরে গাক্ না সবাই

छेश्रा (थमान धूत्रदान,---

গান না যে কেউ—আসল কথা

नारेक कारता खत्र ताथ!

কাগজ ওয়ালা সারি সারি

নাড়চে কাগজ হাতে নিয়ে—

वाक्रमा (थरक भांखि विमाग्र

তিনশো কুলোর বাতাস দিয়ে!

काशक मिर्य त्नेका वानात्र

বেকার যত ছেলেপিলে,--

কর্ণ ধ'রে পার করবেন

ত্ৰ-এক পয়সা খেয়া দিলে।

সস্তা শুনে ছুটে আসে

यज मौर्घकर्ग खरना—

यम्पार्भत ठ्रामित्क

তাই উড়েছে এত ধুলো!

क्ष क्ष "वर्षां अवार्

থাদের মত গজিরে ওঠে,

ছুঁ চোলো সব জিবের ডগা

কাটার মত পায়ে ফোটে।

তারা বলেন "আমিই কল্কি"

গাঁজার কল্কি হবে বুঝি!

অবতারে ভরে গেল

যত রাজ্যের গলি ঘুঁজি !

পাড়ায় এখন কত আছে

কত কব' তার,

वक्रामर्भ (भनाई अन

বরা' অবতার !

দাঁতের জোরে হিন্দু শাস্ত্র

তুল্বে তারা পাঁকের থেকে।

मांज क्थां नात्र, जात्रत

मांज थिं ठूनीत जनी तर्थ!

व्यात्राष्ट्रा विष्यु कथा,

मिर्थायामीत कानारन,

ক্লিব নাচিয়ে বেড়ায় খত

जिय्ता-अमाना मरखन्न मनः।

বাক্য-ৰন্থা ফেনিয়ে আদে
ভাসিয়ে নে যায় ভোড়ে,
কোন ক্রমে রক্ষে পেলেম
মা-গঙ্গার ক্রোড়ে।

হেথায় কিবা শাস্তি-ঢালা
কুলুকুলু তান!
সাগর পানে ব'হে নে যায়
গিরিরাজের গান।
ধীরি ধীরি বাতাসটি, দেয়
জলের গায়ে কাঁটা।
আকাশেতে আলো আঁধার
থেলে জোরার ভাঁটা।
তীরে তীরে গাছের সারি
পল্লবেরি ঢেউ।
সারাদিন হেলে দোলে
দেখে না ত'কেউ!

পূর্বতীরে তরু শিরে অরু হেসে চায়— পশ্চিমেতে কুঞ্জমাঝে मका दिनदम यात्र। তীরে ওঠে শব্ম ধ্বনি धीरत जारम कारन, সন্ধ্যা তারা চেয়ে থাকে धत्रवीत পात्न। ঝাউবনের আড়ালেতে **हाँ** जिंद्र शीद्र श टकार्ट मक्ता मीপश्रम অন্ধকার তীরে। धरे माछि मिलिए मिटमिছिटनम पूर्व, र्षेरगानिण जूरनिहरनम ऋ एथ ছिल्यम श्व!

জান ত ভাই আমি হচ্চি बन्हदर्वत्र कांछ। আপন মনে সাঁৎরে বেড়াই— ভাগি দিন রাত! রোদ পোহাতে ডাঙ্গায় উঠি, श्वाि थारे काथ् वृष्ण। ভয়ে ভয়ে কাছে এগোই তেমন তেমন লোক বুঝে! গতিক মন্দ দেখ্লে আবার ডুবি অগাধ জলে। এম্নি করেই দিনটা কাটাই नुरकां চুরির ছলে! जूमि (कन ছिপ ফেলেছ व्रक्त कार्ष्ट् विक करत **ोन भारत्रे करम**! আমি তোমায় জলে টানি

তুমি ডাঙ্গায় টান'।

হার ত নাহি মান'।
হার ত নাহি মান'।
আমারি নয় হার হয়েচে
তোমারি নয় জিৎ—
থাবি থাচিচ ডাঙ্গায় পড়ে
হয়ে পড়েচি চিৎ।
আর কেন ভাই, ঘরে চল,
ছিপ গুটয়ে নাও—
রবীক্রনাথ ধরা পড়েচে
ঢাক পিটিয়ে দাও।

পত্ৰ।

भीगान् नागू वस्र এवः हागू वस्र

* * मन्नापक मगीर्भयू।

मात्रू (वान् व्यात्र होत्रू (वारम

কাগজ বেনিয়েছে,

विषा थाना वष्ड किनियह

(आयात नामू आयात ठामू!)

काथाय राग वावा रक्षमात्र

या खननी करे!

সাত-রাজার-ধন মাণিক ছেলের

मूर्थ कूष्ट थरे!

(आंभात मामू आंभात होमू!)

मामू ছिन এক-द्रखि

চামু তথৈবচ,

काथा (थरक धर्न भिरथ

এতই थठमठ !

(आयात्र मात्र आयात्र ठात्र।)

मात्र् वत्नन "मामा आत्रात्र"

চাসু বলেন "ভাই,"

আমাদের দোঁহাকার মত

जिज्रान नारे!

(আমার দামু আমার চামু!

গায়ে পড়ে গাল পাড়চে

বাজার সর্গরম,

মেছুনি-সংহিতায় ব্যাখ্যা

হিঁহর ধরম !

(मात्रू आगात ठातू!)

দাম্চক্র অতি হিঁছ

আরো হিঁত্ চাম্

मक्न मक्न भकांत्र हिंश्

व्राम् वाम् नाम्--

(मात्र कामात्र ठात्र!)

রব উঠেছে ভারত ভূমে

हिंह, (भना छात्र,

দাসু চাসু দেখা দিয়েচেন ভয় নেইক আর।

(अदब मामू, अदब हामू!)

নাই বটে গোতম অত্রি যে যার গেছে স'রে,

হিঁত্ন দামু চামু এলেন কাগজ হাতে ক'রে !

(আহা দামু আহা চামু!)

লিখ্চে দোঁহে হিঁছশাস্ত্র এডিটোরিয়াল,

माम् वन्टि मिरथा कथा

ठाम् मिटक शाल।

(शंत्र नामू शंत्र ठामू!)

অমন হিঁছ মিল্বে নারে সকল হিঁছর সেরা,

বোস্বংশ আ্র্য্যবংশ সেই বংশের এঁরা !

(বোস্ ए। पू (वाम् हापू!)

কলির শেষে প্রজাপতি जूलिছिलिन होई, ञ्च इष्य दिविया এलिन

আৰ্য্য হুটি ভাই;

(आर्या नामू ठामू!)

मख मिरा श्र्ष जून्र

रिंश् नास्त्रत भून,

भिनारे करू ब आमनानिए

वाकात छ्लू छ्ल।

(দামু চামু অবতার!)

यस राजन "य'स यात्रि"

(वरातंत्र इन एडन,

माम् ठाम् भाज ছाङ,

देत्रण मत्न (थम !

(अदत मामू अदत हामू ह

মেড়ার মত লড়াই করে लिखन पिक्छा भाषा, मार्थ कार्थ थ्रथ्र

হিঁত্য়ানির খোঁটা !

(আমার হিঁত্র দামু চামু!)

मात्रू ठात्रू (कॅरम आकून

काथात्र (इँ इत्रानि !

ট্যাকে আছে, গোঁজ' যেথায়

শিকি গুয়ানি।

((थांदन त्र यथा हिंद्यानि !)

मामू চामू क्रम উঠ्न

হিঁত্য়ানি বেচে,

হামাগুড়ি ছেড়ে এখন

विष्ां विकास स्वर्ध

((वर्णेत्र वाष्ट्रा काम् हाम् !)

আদর পেয়ে নাত্স্ মুত্স্

আহার করচে ক'নে,

ভরিবৎটা শিখ্লেনাক

वारभन्न भिका मारव !

(अद्भ मामू ठाम्!)

अम वाश्र, कान निरम,

निथ्दि मनां होत,

कात्नव्र यमि अভाव थादक

তবেই নাচার !

(शंग्र मामू शंग्र ठामू !)

পড়াশুনো কর, ছাড়'

भाज आयादा,

भिष्य (पार्य जिल्दा वार्य

স্বভাব চাষাড়ে।

(ও দামু ও চাম।)

ভদ্রলোকের মান রেখে চল্

ভज वल्दव তোকে,

म्थ ছूটোলে কুলশীলটা

(खरन रक्ल्रव लाक !

(शंत्र नाम् शंत्र ठाम् !)

পয়সা চাও ত পয়সা,দেব

शुंक माधू भरथ,

ভাৰচ্চ শোভতে কেউ কেউ যাবৎ ৰ'ভাষতে! (হে দামু হে চামু!)

वित्रशेतं श्व।

হয় কি না হয় দেখা, ফিরি কি না ফিরি,
দ্রে পেলে এই মনে হয়;
ছজনার মাঝখানে অস্ককারে ঘিরি
কেপে থাকে সতত সংশয়।
এত লোক, এত জন, এত পথ, গলি,
এমন বিপুল এ সংসার,
ভয়ে ভয়ে হাতে হাতে বেঁধে বেঁধে চলি
ছাড়া পেলে কে আর কাহার।

তারায় তারায় সদা থাকে চোকে চোকে

অস্কলারে অসীম গগনে।

ভয়ে ভয়ে অনিমেষে কম্পিত আলোকে

বাধা থাকে নয়নে নয়নে।

চৌদিকে অটল গুরু স্থাতীর রাতি,

তর্গহীন মরুম্য ব্যোম,

মুখে মুখে চেয়ে তাই চলে যত যাতী।

চলে গুরু রবি ভারা সোম।

নিমেবের অন্তরালে কি আছে কৈ জানে,
নিমেবে অঁপীন পড়ে ঢাকা—

অন্ধ কাল-তুরঙ্গন রাশ নাহি মানে

বেগে ধার অদৃষ্টের ঢাকা।

কাছে কাছে পাছে পাছে চলিবারে চাই

জেগে জেগে দিতেছি পাহারা,

একটু এসেছে ঘুন—চমকি তাকাই

গেছে চলে কোথার কাহারা।

ছাড়িয়া চলিয়া গেলে কাঁদি ভাই একা বিরহের সমুদ্রের তীরে। অনত্তের মাঝথানে হৃদণ্ডের দেখা তাও কেন রাহু এসে বিরে। মৃত্যু যেন মাঝে মাঝে দেখা দিরে যাঁর পাঠার সে বিরহের চর্ল সকলেই চলে যাবে পড়ে' রবে হার ধরণীর শুন্য থেলাম্বর! গ্রহ তারা ধুমকেত্ কত রবি শশী
শ্ন্য-বেরি জগতের ভীড়,
তারি মাঝে বুদি ভাঙ্গে, বদি যায় থিসি
আমাদের ছদণ্ডের নীড়,—
কোথায় কে হারাইব—কোন্ রাত্রি বেলা
কে কোথায় হইব অতিথি!
তথন কি মনে রবে ছদিনের খেলা
দরশের পরশের শ্বৃতি!

তাই মনে ক'রে কিরে চোকে জল আসে

একটুকু চোকের আড়ালে!

প্রাণ যারে প্রাণের অধিক ভাল বাসে

সেও কি রবে না এক কালে!

আশা নিয়ে এ কি শুধু খেলাই কেবল—

মুখ ছঃখ মনের বিকার!

ভালবাসা কাঁদে, হাসে, মোছে অঞ্জ্বল,

চার, পার, হারার আবার!

श्व।

बिग्रजी हेन्त्रिता। প্রাণাধিকাস্থ। नामिक।

এত বড় এ ধরণী মহাসিদ্ধ-বেরা,

হলিতেছে আকাশ সাগরে,—

দিন-হই হেথা রহি মোরা মানবেরা

শুধু কি মা যাব থেলা করে!
তাই কি ধাইছে গঙ্গা ছাড়ি হিমগিরি,

অরণ্য বহিছে ফুল ফল,—
শত কোটি রবি তারা আমাদের ঘিরি
গণিতেছে প্রতি দণ্ড পল!

শুধু কি মা হাসি-খেলা প্রতি দিন রাত, দিবসের প্রত্যেক প্রহর! প্রভাতের পরে আসি ন্তন,প্রভাত লিখিছে কি, একই স্বাক্ষর! कानाकानि शामाशिमि (कालाठ खंडीत्य्र),

व्याम नयन निभी मन,

पश-इह धत्रभीत श्वाट नूडीत्य

थ्वा हत्य श्वाट भग्न।

नार्श कि, मा, मानत्वत्र गंजीत जावा, श्रम्पत्रत्र मीमारीन जावा! ज्ञात्वत्र ज्ञान्य क्ष्यत्वत्य ज्ञान्य क्ष्यत्वत्य ज्ञान्य क्ष्यामा! श्रम्पत्रत्य ज्ञान्य क्ष्यत्र क्ष्यत्य ज्ञान्य श्रम्पत्र क्ष्यत्य क्ष्यत्य ज्ञान्य श्रम्पत्र ज्ञान्य श्रम्पत्र क्ष्यत्य क्ष्यत्य क्ष्यत्य ज्ञान्य श्रम्पत्र क्ष्यत्य क्ष्यत्य क्ष्यत्य ज्ञान्य श्रम्पत्र क्ष्यत्य क्षय्य क्ष्यत्य क्षयत्य क्ष्यत्य क्षयत्य क्ष्यत्य क्षयत्य क्

শুনো না কাহারা ওই করে কানাকানি অতি তুচ্ছ ছোট ছোট কথা! পরের হৃদয় লুয়ে করে টানাটানি শক্নির হত নির্শমভা! শুনো না করিছে কারা কথা-কাটাকাটি মাতিয়া জ্ঞানের অভিমানে, রসনায় রসনায় ঘোর লাঠালাঠি, আপনার বুদ্ধিরে বাথানে!

তুমি এস দ্রে এস, পবিত্র নিভ্তে,
কুদ্র অভিমান যাও ভূলি।
সযতনে ঝেড়ে ফেল বসন হইতে
প্রতি নিমেষের যত ধূলি!
নিমেষের কুদ্র কথা, কুদ্র রেণু জাল
আছয় করিছে মানবেরে,
উদার অনস্ত তাই হতেছে আড়াল
তিল তিল কুদ্রতার খেরে!

णाष्ट्र, या, তোমার মুখে স্বর্গের কিরণ, হদরেতে উষার আভাস, খুজিছে সরল পথ ব্যাকুল নুয়ন, চারিদিকে মর্জ্যের প্রবাস। আপনার ছায়া ফেলি আমরা সকলে
পথ তোর অন্ধকারে ঢাকি,
ক্মুদ্র কথা, ক্মুদ্র কাজে, ক্মুদ্র শত ছলে,
কেন তোরে ভুলাইয়া রাখি!

কেন, মা, তোমারে কেহ চাহে না জানাতে
মানবের উচ্চ কুলশীল,
অনস্ত জগত ব্যাপী ঈশ্বরের সাথে
তোমার যে স্থগভীর মিল!
কেন কেহ দেখার না, চারিদিকে তব
ঈশ্বের বাছর বিস্তার!
ঘেরি তোরে, ভোগ-স্থখ ঢালি নব নব
গৃহ বলি রচে কারাগার।

व्यनस्थित माञ्चथात्म माञाश्व मा व्यामि, हित्र मिथ व्याकात्मित्र शास्त्र, श्रक् विमन्-विद्या, शूर्व ऋश्वाभि व्यर्गम्थी,कमन-नशास्त्र! আনন্দে ফুটিয়া ওঠ গুল্র সুর্যোদয়ে প্রভাতের কুস্থনের মত, দাঁড়াও সায়াহ্ল মাঝে পবিত্র-হৃদয়ে মাথাথানি ক্রিয়া আনত!

শোন শোন উঠিতেছে স্থান্তীর বাণী ধ্বনিতেছে আকাশ পাতাল।
বিশ্ব চরাচর পাহে কাহারে বাথানি আদিহীর অন্তহীন কাল!
যাত্রী সবে ছুটিয়াছে শ্ন্যপথ দিয়া,
উঠেছে সঙ্গীত কোলাহল,
প্রই নিথিলের সাথে কণ্ঠ মিলাইয়া
মা আমরা যাত্রা করি চল্!

যাত্রা করি র্থা যত অহশ্বার ইতে, যাত্রা করি ছাড়ি হিংসা বেষ, যাত্রা করি স্বর্গময়ী কঙ্গণার পথে, শিরে ধরি সভ্যের আঁদৈশ ! যাত্রা করি মানবের হৃদয়ের মাঝে
প্রাণে লয়ে প্রেমের আলোক,

আয় মাগো যাত্রা করি জগতের কাজে
তুচ্চ করি নিজ তুঃথ শোক!

জেনো মা এ স্থাপ-ছঃপো-আকুল সংসারে

মেটে না সকল তুচ্ছ আশ,
তা বলিয়া অভিমানে অনস্ত ঠাহারে
কোরোনা কোরোনা অবিখাস!

স্থা বলে যাহা চাই স্থা তাহা নয়,
কি যে চাই জানি না আপনি,
অগাবে জলিছে ওই, ওরে কোরো ভয়,
তুজান্সের মাথার ও মণি!

कृत ख्र एडंक बाग्न ना नरह निःचान, ভাঙ্গে বালুকান পেণাঘর, তেকে গিগে বলে দেয়, এ নহে আবাস, শীবদের এ নহে নির্ভর! সকলে শিশুর মত কত আবদার আনিছে তাঁহার সনিধান, পূর্ণ যদি নাহি হল, অমনি তাহার সম্বরে করিছে অপমান !

কিছুই চাবনা মাগে! আপনার তরে,
পেয়েছি যা' শুধিব সে ঋণ,
পেয়েছি যে প্রেমস্থা হৃদয় ভিতরে,
ঢালিয়া তা' দিব নিশিদিন!
স্থে শুধু পাওঁয়া যায় স্থ্য না চাহিলে,
প্রেম দিলে প্রেমে পুরে প্রাণ,
নিশিদিসি আপনার ক্রন্দন গাহিলে
ক্রন্দনের নাহি স্ববসান!

মধুপাত্তে হতপ্রাণ পিপীলির মত ভোগ স্থথে জীর্ণ হয়ে থাকা, বুলে থাকা বাহুড়ের সত শির নত অশকড়িয়া দংসারের শাখা, জগতের হিসাবেতে শ্ন্য হয়ে হায়
আপনারে আপনি ভক্ষণ,
কলে উঠে ফেটে যাওয়া জলবিষপ্রায়
এই কিরি স্থথের লক্ষণ!

এই অহিফেন-স্থ কো চায় ইহাকে
মানবত্ব এ নয় এ নয়!
রাহুর মতন স্থা প্রাস করে রাথে
মানবের মানব-হাদয়!
মানবেরে বল দেয় সহস্র বিপদ্দ,
প্রাণ দেয় সহস্র ভাবনা,
দারিদ্যো খুঁজিয়া পাই মনের সম্পদ্দ,
শোকে পাই অনস্ত সাস্তনা!

চির দিবসের স্থথ রয়েছে গোপন
আপনার আত্মার মাঝার।
চারি দিকে স্থথ খুঁজে প্রতি প্রান্ত প্রাণ মন,
হেথা আছে, কোথা নেই আর ধ্

বাহিরের স্থ সে, স্থথের মরীচিকা, বাহিরেতে নিয়ে যায় ছোলে, যথন মিলায়ে যায় মায়া কুহেলিকা, কেন কাঁদি স্থথ নেই বলে!

দাঁড়াও সে অন্তরের শান্তি-নিকেতনে
চিরজ্যোতি চির ছায়াময়!
ঝড়হীন রৌজহীন নিভৃত নিলয়ে
জীবনের অনস্ত আলয়।
পুণ্য-জ্যোতি মুখে লয়ে পুণ্য হাসি থানি,
অন্নপূর্ণা জননী সমান,
মহা স্থে স্থ তৃঃথ কিছু নাহি মানি
কর সবে স্থথ শান্তিদান।

মা, আমার এই জেনো হদরের সাধ
তুমি হও লক্ষীর প্রতিমা;
মানবেরে জ্যোতি দাও, কর' আশার্কাছ,
অকলফ মূর্ত্তি মধুরিমা!

बात्माद्याः '

কাছে থেকে এত কথা বলা নাহি হয়, হেসে থেলে দিন যায় কেটে, দূরে ভয় হয় পাছে না পাই সময়, বলিবার সাধ নাহি মেটে।

কত কথা বলিবারে গৈহি প্রাণপণে
কিছুতে মা বলিতে না পারি,
স্নেহ মুখখানি তোর পড়ে মোর মনে,
নয়নে উথলে অশ্রুবারি।
স্থলর মুখেতে তোর মগ্ন আছে ঘুমে
একথানি পবিত্র জীবন।
ফলুক স্থলর ফল স্থলর কুস্থমে
আশীর্বাদ কর মা গ্রহণ।

到国

শ্রীমতী ইন্দিরা। প্রাণাধিকাম। নাদিক।

চারিদিকে তর্ক উঠে সাঙ্গ নাহি হয়,
কথায় কথায় বাড়ে কথা!
সংশয়ের উপরেতে চাপিছে সংশয়
কেবলি বাড়িছে ব্যাকুলতা!
কেনার উপরে ফেনা, ঢেউ পরে ঢেউ,
গরজনে বধির শ্রবণ,
তীর কোন্ দিকে আছে নাহি জানে কেউ
হা হা করে আকুল পবন।

वरे क द्वारण त्र भारत निष्य भिन रक्ट পরিপূর্ণ এক দি জীবন, भीরবে মিটিয়া যাবে সকল সন্দেহ, থেমে যাবে সহস্র বচন! তোমার চরণে আসি মাগিবে মরণ
লক্ষ্যহারা শত শক্তমত,
যে দিকে ফিরাবে তুমি ত্থানি নয়ন
সে দিকে হৈরিবে সবে পথ!

অন্ধকার নাহি যায় বিবাদ করিলে,

মানে না বাহুর আক্রমণ!

একটি আলোক শিখা সমুখে ধরিলে

নীরবে করে সে পলায়ন।

এস মা উষার আলো, অকলঙ্ক প্রাণ,

দাঁড়াও এ সংসার আধারে।

জাগাও জাগ্রত-হদে আনন্দের গান,

কুল দাও নিদ্রার পাথারে!

চারিদিকে নৃশংসতা করে হানাহানি,
মানবের পাষাণ পরাণ!
শানিত ছুরীর মত বিধাইয়া বাণী,
হৃদয়ের মৃক্ত করে পান!

ত্ষিত কাতর প্রাণী মাগতেছে জল উন্ধারা করিছে বর্ষণ, শ্যামল আশার ক্ষেত্র করিয়া বিফল স্বার্থ দিয়ে করিছে কঁষণ!

শুধু এদে একবার দাঁড়াও কাতরে

মেলি ছটি সকরুণ চোক,
পড়ুক ছ ফোঁটা অশ্রু জগতের পরে

যেন ছটি বাল্মীকির শ্লোক!
ব্যথিত, করুক্ স্নান তোমার নয়নে,
করুণার অমৃত নির্মরে,
তোমারে কাতর হেরি, মানবের মনে
দয়া হবে মানবের পরে!

সমুদয় মানবের সৌন্দর্য্যে ভুরিয়া হও তুমি অক্ষয় স্থানর। ক্ষুদ্র রূপ কোথা যায় বাতাসে উবিয়া হই চারি পলকের পরু! তোমার সৌন্দর্য্যে হোক্ মানব স্থন্দর, প্রেমে তব বিশ্ব হোক আলো। তোমারে হেরিয়া যেন মুগুধ অন্তর মানুষে থানুষ বাদে ভাল।

वात्माता।

शब

बीय जी हिन्मता। প্রাণাধিকাস্থ।

नामिक।

আমার এ গান, মাগো, শুধু কি, নিমেষে
মিলাইবে হৃদয়ের কাছাকাছি এসে ?
আমার প্রাণের কথা
নিদ্রাহীন আকুলতা
শুধু নিশ্বাসের মত যাবে কি মা ভেসে!

এ গান তোমারে সদা থিরে যেন রাথে,

 শত্যের পথের পরে নাম ধ'রে ডাকে।

 শংসারের স্কুখে ছুথে

 চেয়ে থাকে তোর মুথে,

 চির আশীর্ষাদ সম কাছে কাছে থাকে!

বিজ্ঞনে সঙ্গীর মত করে ধ্যেন বাস! অমুক্ষণ শোনে তোর হৃদ্ধের আশ। পড়িয়া সংসার ঘোরে
কাঁদিতে হেরিলৈ তোরে
ভাগ করে নেয় ধেন হুখের নিশ্বাস!

সংসারের প্রলোভন যুবে আসি হানে
মধুমাথা বিষবাণী ছর্বল পরাণে,
এ গান আপন স্করে
মন তোর রাখে পুরে,
ইষ্টমন্ত্র সম সদা বাজে তোর কানে!

আমার এ গান যদি স্থলীর্ঘ জীবন তোমার বসন হয় তোমার ভূষণ! পৃথিবীর ধূলিজাল ক'রে দেয় অন্তরাল, তোমারে করিয়া রাথে স্থলর শোভন!

আমার এ গান যদি নাহি মানে মান', উদার বাতাস হ'য়ে এলাইয়া ডান' সৌরভের মত তোরে
নিয়ে যায় চুরি কোরে,
খুঁজিয়া দেখাতে যায় স্বর্পের সীমানা!

এ গান যদিরে হয় তোর ধ্রুব তারা,

অন্ধবারে অনিমেষে নিশি করে সারা!

তোমার মুখের পরে

জেগে থাকে স্নেহভরে

অক্লে নয়ন মেলি দেখায় কিনারা!

আমার এ গান যদি পশি তোর কানে
মিলায়ে মিশায়ৈ যায় সমস্ত পরাণে!
তপ্ত শোণিতের মত
বহে শিরে অবিরত,
আনন্দে নাচিয়া উঠে মহত্বের গানে!

এ গান বাঁচিয়া থাকে যদি তোর মাঝে! অশিবভারা হয়ে তোর অশ্বৈতি বিরাজে! ১৪ এ যেনরে করে দান
সতত নৃতন প্রাণ,
এ যেন জীবন পায় জীবনের কাজে!

যদি যাই, মৃত্যু যদি নিমে যায় ডাকি,
এই গানে রেথে যাব মোর স্নেহ অ'থি।

যবে হায় সব গান

হয়ে যাবে অবসান,
এ গানের মাঝে আমি যদি বেঁচে থাকি!

খেলা।

পথের ধারে অশথ্-তলে (यरप्रिं (थना करते; আপন মনে আপনি আছে সারাটি দিন ४'রে। উপর পানে আকাশ শুধু, . সমুথ পানে মাঠ, भव्रदकारण द्राम् भरफ्रष्ट् মধুর পথ ঘাট। ছুটি একটি পথিক চলে शन्न करत्र, श्राम। লজাবতী বধৃটি গেল ছायाणि नित्य পारम। আকাশ-ঘেরা মাঠের ধারে विभाग (थम्ब्र-चद्र, এক্টি মেয়ে আপন মনে কতই থেলা করেছ

মাথার পরে ছায়া পড়েছে (ताम পড़েছে काटन. পায়ের কাছে এক্টি লতা वांजाम (श्राय मार्ष ! মাঠের থেকে বাছুর আদে দেখে নতুন লোক, षा (वंकिया (क्राय था (क **जावा** जावा का কাঠবিড়ালী উস্থপুস্থ व्यारम शारम (ছार्छ, नय (शत्न त्नकि जूतन চম্ক খেয়ে ওঠে। (मर्या जारे कार्य (मर्थ কত যে সাধ যায়, কোমল গায়ে হাত বুলায়ে চুমো (थर्वः ठाम !

माध (यटण्डा कार्यविषानी जूटन निरम दूरक, ভেঙ্গে ভেঙ্গে টুকু টুকু थावात (मरव मूरथ। মিষ্টি নামে ডাক্বে তারে গালের কাছে রেখে, বুকের মধ্যে রেখে দেবে व्यां हम मिर्य (ए दिन । "আয় আয়" ডাকে তাই করুণ স্বরে কয়, "আমি কিছু বলব না ত আমায় কেন ভয়!" মাথা তুলে চেয়ে থাকে উঁচু ডালের পানে, कार्ठिकाली ছूटि यात्र वाथा भाग ध्रीत्।

রাখালের বাঁশি বাজে স্থানুর তরুছায়, •

থেল্তে থেল্তে মেয়েটি তাই থেলা ভূলে যায়।

তরুর মুলে মাথা রেখে চেয়ে থাকে পথে,

ना जानि कान् পরীর দেশে ধায় সে মনোরথে।

এক্লা কোথায় ঘুরে রেড়ায় মায়া দীপে গিয়ে;—

হেনকালে চাষী আদে হুটি গক্ত নিয়ে।

চমক্ ভেকে চায়।

অ'াথি হতে মিলায় মায়া,

अशन पूर्व यात्र।

भाशोत भानक।

খেলাধুলো সব রহিল পড়িয়া ছুটে চলে আদে মেয়্র— বলে তাড়াতাড়ি—"ওমা দেখু দেখু, कि अप्ति इ दिन्यु (हर्य !" অাখির পাতায় হাসি চমকায়, ঠোটে নেচে ওঠে হাসি, ट्रिय यात्र जून वैरिधनारका हून, খুলে পড়ে কেশ রাশি! হুটি হাত তার ঘিরিয়া ঘিরিয়া রাঙা চুড়ি কয়-গাছি, করতালি পেয়ে বেজে ওঠে তারা কেঁপে ওঠে তারা নাচি। यार्यत्र शनाय वाङ् छ्टि द्वैरध (कारण धरम वरम रमरम। वरन তाড़ा जि - "अभा तिथ् तिथ् कि जिल्ह (मिथ् (ह्या 1%)

সোনালি রঙের পাখীর পালক ধোয়া দে দোনার স্থোতে, थरम এল रयन তরুণ আলোক অরুণের পাথা হতে; नय्न- पूलारना रकामल প्रत्न ঘুমের পরশ যথা, মাথা যেন তায় মেঘের কাহিনী नील जाकात्मत कथा! ছোট থাট নীড়, শাবকের ভীড় কতমত কলরব, প্রভাতের স্থ্র্থ, উড়িবার আশা মনে পড়ে যেন সব। नाय (म भोनक कि भोनि वूनीय, অাখিতে বুলায় মেয়ে, वरण रहरग रहरम ''अभा रम्भ् रमभ् कि अत्निष्टि (मेश् (हृद्य ।"

या (मिथिन (हर्य, करिन शिमिरम "किवा जिनित्यत ছिति ?" ভূমিতে ফেলিয়া যাইল চলিয়া আর না চাহিল ফিরি? (यर यणित यूर्थ कथा ना कृषिन মাটিতে রহিল বিদ। শুন্য হতে ষেন পাখীর পালক ভূতলে পড়িল খসি! (थलाध्रला जात्र श्रला नारका जात्र, शिमिनारेन मूरथ, थीरत्र थीरत्र त्नर्य इपि स्कांना खन मिथा मिल इंडि किरिथ। পानकि वित्य ताथिन नुकारम গোপনের ধন তার, আপনি খেলিত আপনি তুলিত प्रिथां ना कार्रेत यात्र!

वानीदान।

रेगामत कत यागीकाम। थवाय উঠেছে ফুটি শুল প্রাণ শুলি, नमत्नत्र अत्न एक मश्राम, ইহাদের কর আশার্কাদ। ছোট ছোট হাসি মুখ कारन ना धंत्रात प्रथ, হেদে আদে তোমাদের দারে नवीन नग्रन जूलि কৌতুকেতে ছলি ছলি टिएय टिएय दिथ ठांत्रिशदित । সোনার রবির আলো কত তার লাগে ভালো, ভাল লাগে মায়ের বদন। दिशाय अत्मरहे जूति, धूलिख कात्न ना धूलि, সবই তার আপনার ধন।

'(कार्ल जूल नख जेरत,

ज रयन किंग्न ना रफरत,

हत्रस्ट ना घट विश्वान,

त्कत्र यासारत निर्म

शतिशृर्व जान किरम

रेशानित कर जानीकान।

তোমার কোলের কাছে কত সাধে আসিয়াছে, তোমাু-পরে কতনা বিশ্বাস। ওই কোল হতে থ'সে এ (यन (गा পথে व'म একদিন না ফেলে নিশাস। नजून প্রবাদে এদে সহস্র পথের দেশে नीत्रत्व ठाहिएइ ठाति छिएउ, এত শত লোক আছে এসেছে তোমারি কাছে • मः मादात्र शंथ खशहित्छ।

दिशो जूमि नद्य यादि क्थां नि ने क'द्य यादि, नात्थ यादि हात्रात्र मजन, जोरे विन—त्मिथा त्मिश्या व विश्वाम द्वरथा द्वरथा, भाषाद्व मिखन। विमर्जन!

ক্ত এ মাথার পর
রাথ গো করণ-কর,

ইহারে কোরো না অবহেলা
এ ঘোর সংসার মাঝে
এসেছে কঠিন কাজে,
আসেনি করিতে শুধু থেলা!
দেখে মুখ শতদল
চোখে মোর আসে জল,
মনে হয় বাঁচিবে না বুঝি,
পাছে, স্থকুমার প্রধণ
হিঁড়ে হয় খান্ খান্,

जीवत्नत्र भातावादत्र यूवि!

থাই হাসিম্থগুলি
হাসি পাছে যায় ভূলি,
পাছে বেরে অাধার প্রমাদ!
উহাদের কাছে ডেকে
বৃকে রেথে, কোলেররেথে
তোমরা কর গো আশীর্কাদ।
বল, "স্থথে যাও চোলে
ভবের তরঙ্গ দ'লে,
স্থর্গ হতে আস্লক্ বাতাস,—
স্থুথ হুঃথ কোরো হেলা
সে কেবল ঢেউ-থেলা
লাচিবে তোদের চারিপাশ।"

বসন্ত অবসান।

मिश्रु (ভরবী। আড়াঠেকা

कथन् वमख (भण,

এবার হল না গান!

कथन् वक्ल-मृल

(ছয়েছিল ঝরা ফুল,

कथन् (य क्ल-कां)

হয়ে গেল অবসান!

कथन् वमख रागन

এবার হল না গান!

ध्यात वमस्य किरत य्थीखन जारा नित्र! जनिकृत खन्नित्रा

करत्र नि कि मधुशान! धवात्र कि मभीत्रन कार्गात्र नि क्नवन! माफ़ा मिरत्र (शन ना क, চলে शिन खित्रभान! कथन् वमस्र शिन, धवांत हन ना शीन!

যতগুলি পাখী ছিল
গেয়ে বুঝি চলে গেল,
সমীরণে মিলে গেল
বনের বিলাপ তান।
ভেকেছে ফুলের মেলা,
চলে গেছে হাসি-থেলা,
এতক্ষণে সন্ধে-বেলা
জাগিয়া চাছিল প্রাণ!
কথন্ বসন্ত গেল
এবার হলনা গনি!

বসস্তের শেষ রাতে এসেছিরে শৃক্ত হাতে, এবার গাঁথিনি মালা

কি তোমারে করি দান!
কাঁদিছে নীরব বাঁশি,
অধরে মিলায় হাসি,
তোমার নয়নে ভাসে
ছল ছল অভিমান!
এবার বসস্ত গেল,
হলনা, হলনা গান!

বাশি।

বেহাগ — আড়াথেমটা।
ভগো শোন কে বাজার!
বন-ফুলের মালার গন্ধ
বাশির তানে মিশে যার।
অধর ছু রে বাঁশি থানি
ছুরি করে হাসি থানি,
বঁধুর হাসি মধুর গানে
প্রাণের পানে ভেসে যার!
ভগো শোন কে বাজার!

क्षवत्नत्र खमत त्सि विभिन्न भारम श्रम्भद्र, वक्ष श्रिम आकूम रदेन वाभिन्न भीत्म मुखंदन! वम्सात्रि कण्णान कारम आरम, केंद्रम क्षांन,

कि ଓ किंग्ना

আকাশে ঐ মধুর বিধু
কাহার পানে হেসে চায়!
তগো শোন কে বাজায়!

वित्रश।

रिভরবী। একণ্ডালা।

আমি নিশি নিশি কত রচিব শর্মন

আকুল নয়নরে!

কত নিতি নিতি বনে করিব যতনে

क्ष्म हत्रम दत्र!

कठ भन्न यामिनी श्रेट विकल,

वमख यादि हिनशा!

কন্ড উদিবে তপন আশার স্বপন

श्र भारत हिन्या!

बहे योवन कड त्राधिव वैधियां,

यतिव कैं। पिया ति !

म्हिल प्रमा करन भारति व

मारिया माधिया त्त्र !

শামি কার পথ চাহি এ জনম-বাহি

कांत्र भन्नभंग याष्टित !

বেন আসিবে বলিয়া কে গেছে চলিয়া তাই আমি বসে আছিরে!

তাই মালাটি গাঁথিয়া পরেছি মাথায় নীলবাসে তমু ঢাকিয়া,

তাই বিজ্ঞন-আলয়ে প্রদীপ জালায়ে একেলা রয়েছি জাগিয়া!

ওগো তাই কত নিশি চাঁদ ওঠে হাসি, তাই কেঁদে যায় প্রভাতে।

ওগো তাই ফুল-বনে মধু-সমীরণে ফুটে ফুল কত শোভাতে!

ওই বাঁশি স্বর তার আসে বারবার সেই শুধু কেন আসে না!

अहे
कामग-आमन श्ना পড়ে थाक
किला मत्त्र ७४ वामना !

(कन कुछ कुछ शिक कुछित्रशा ७८५
वािमनी (व ७८५ शिङ्गि !

ওগো যদি নিশি-শেষে আদে হেদে হেদে, মোর হাসি আর রবে কি!

এই জাগরণে ক্ষীণ বদন মলিন আমারে হেরিয়া কবে কি!

আমি সারা রজনীর গাঁথা ফুল মালা প্রভাতে চরণে ঝরিব,

ওগো আছে স্থশীতল যমুনার জল দেখে তারে আমি মরিব।

राकि।

কুম্নের গিয়েছে সৌরভ, জীবনের গিয়েছে গৌরব! এখন যা-কিছু সব ফাঁকি, ঝিরতে মরিতে শুধু বাকি!

विलाश।

बिँबिए। এकुणना।

ওগো এত প্রেম আশা প্রাণের তিয়াষা

কেমনৈ আছে সে পাশরি!

छत्व त्रथा कि शास्त्र ना हाँ मिनी याभिनी,

मिथा कि वाष्ट्रना वामती!

मिथ (इथा मभीत्र मूल्फ क्लर्क

'সেথা কি পবন বহে না!

সে যে তার কথা মোরে কহে অমুকণ

মোর কথা তারে কহেনা !

यि वाभादि वाजि म जूनित मजनि,

व्यागादा जूनात्म (कन (म।

व्हे छिण जात मानतम !

ष्ट्य क्यूम भन्नत्न नन्नत्न

क्टि ছिन पूथ त्राजित्त्र,

তবে কে জানিত তার বিরহ আমার

হবে জীবনের সাথীরে!

यि यान नाहि त्रार्थ स्रूर्थ यिन थारक

তোরা একবার দেখে আয়,

এই নয়নের ত্যা পরাণের আশা

চরণের তলে রেখে আয়!

আর নিয়ে যা' রাধার বিরহের ভার

কত আর ঢেকে রাখি বল্!

আর পারিস্ যদি ত আনিস্ হরিয়ে

এক ফোঁটা তার আঁথি জল!

না না এত প্রেম স্থি ভুলিতে যে পারে

তারে আর কেহ সেধ না।

व्यामि कथा नाशि कव, इथ लाख तव,

यत्न यत्न मव' (वष्ना!

अर्गा भिष्क, भिष्क मिथ, भिष्क धरे त्थाम,

মিছে পরাণের বাসনা!

बात कित्र बात बारमना !

मांदादवना।

यिख रेज्यवी। जाज्रारथय्वी। ट्लाट्या मात्रा द्वा একি খেলা আপন সনে! এই বাভাসে ফুলের বাসে মুখখানি কার পড়ে মনে! অ'থির কাছে বেড়ায় ভাসি क कारन शा कारात रामि! शृष्टि (क्राँगे) नयुन मिल्ल ' द्रारथ यात्र এই नत्रन-कारण ! (कान् ছाग्राटक कान् छमानी मृद्र वां जाय व्यवम वां भि, यत्न रुष्न कांत्र यत्नत्र (वनन (कॅटम द्यांश वांनित शांता ! সারা দিন গাঁথি গান काद्र ठाट्टिशाट्ट थान, তক্তলের ছায়ার মতন वरम आधि क्ष वरन।

আকাজ্য

যোগিয়া বিভাস—একতালা।

আজি শরত তপনে প্রভাত স্বপনে
কি জানি প্রাণ কি যে চায় !

ওই শেফালির শাথে কি বলিয়া ডাকে

বিহগ বিহগী কি যে গায়!

আজি মধুর বাতাদে হৃদয় উদাদে রহে না আবাদে মন হায় !

कान् क्ष्यात जात्म, कान् कृत वात्म स्नीन जाकात्म मन धात्र!

আজি কে খেন গো নাই এ প্রভাতে তাই জীবন বিফল হয় গো!

তाই চারিদিকে চায় মন কেঁদে গায়
"এ নহে, এ গহে, নয় গো!"

कान् अश्वतः प्राप्त जाट्य এलाटकर्भ, कान् हाश्रामश्री जमताशः মাজি কোন্ উপবনে বিরহ বেদনে
আমারি কারণে কেঁদে যায়!

আমি যদি গাঁথি গান অথির পরাণ সে গান শুনাব কারে আর !

আমি যদি গাঁথি মালা লয়ে ফুল ডালা কাহারে পরাব ফুলহার!

আমি আমার এ প্রাণ যদি করি দান দিব প্রাণ তবে কার পায়!

সদা ভয় হয় মনে পাছে অযতনে মনে মনে কেহ ব্যথা পায়!

তুমি।

गिटा दादायं। जाज़ादथमणे।

তুমি কোন্ কাননের ফুল,

তুমি কোন্ গগনের তারা!

তোমায় কোথায় দেখেছি

(यन (कान् अश्रान श्रान)!

ক্বে তুমি গেয়েছিলে,

অ'থির পানে চেয়েছিলে

ভূলে গিয়েছি!

खध् मत्नत्र माध्य (कार्य कार्ष्ट,

ঐ নয়নের তারা!

তুমি কথা কোয়ো না,

ज्यि, टिप्न हत्न यां !

এই টাদের আলোতে

তুমি হেদে গলে শোও !

चािम चूरमज्ञ त्याद्य ठाँएमज शांक क्रिय शांकि मध्य व्यार्थ, তোমার অাথির মতন ছটি তারা । ঢালুক্ কিরণ-ধারা!

जून।

कानाजा। य९।

বিদায় করেছ যারে নয়ন জলে, এখন ফিরাবে তারে

কিসের ছলে!

আজি মধু-সমীরণে
নিশীথে কুস্থম-বন্দে,
তাহারে পড়েছে মনে
বকুল তলে!

এথন্ ফিরাবে তারে.

किरमत्र ছल !

সেদিনো ত মধুনিশি
প্রাণে গিয়েছিল, মিশি,
মুকুলিত দশদিশি
কুক্ম-দলে;

হটি সোহাগের বাণী
যদি হত কানাকানী,
যদি ওই মালাথানি
পরাতে গলে!
এখন ফিরাবে আর
ফিসের ছলে!

মধুরাতি পূর্ণিমার
ফিরে আসে বারবার,
সে জন ফেরে না আর
যে গেছে চ'লে !
ছিল তিথি অমুক্ল,
শুধু নিমেষের ভূল,
চিরদিন ত্যাকুল
পরাণ জলে !
এথন্ ফিরাবৈ তারে
ফিসের ছলে !

কো তুঁহু!

কো তুঁছ বোলবি মোয়!
হন্য মাহ মৃঝু জাগসি অহুখন,
ভাঁথ উপর তুঁছ রচলহি আসন,
অরুণ-নয়ন তব মর্ম সঙে মম
নিমিথ ন অন্তর হোয়।
কো তুঁছ বোলবি মোয়!

হাদয়-কমল, তব চরণে টলমল,
নয়ন যুগল মম উছলে ছদছল,
প্রেমপূর্ণ তমু পুলকে ঢলঢল
চাহে মিলাইতে তোয়।
কো তুঁছ বোলবি মোয়!

বাঁশরি ধ্বনি তুহ অমিয়-গরলরে, হৃদয় বিদার্য়ি হৃদয় হরলরে, আকুল-কাকলি তুবন ভরলরে, উত্তল প্রাণ উতরোয়। কো তুঁহু কোলবি মোয়। হেরি হাসি তব মধুপতু ধাওল, শুনির বাঁশি তব পিককুল গাওল, বিকল ভ্রমর সম ত্রিভুবন আওল, চরণ-কমল যুগ ছোঁয়। কো তুঁছ বোলবি মোয়!

গোপবধৃজন বিকশিত যৌবন, পুলকিত যমুনা, মুকুলিত উপবন, নীল নীর পর ধীর সমীরণ, পলকে প্রাণমন থোয়। কো তুঁছ বোলবি মোয়!

তৃষিত আঁথি, তব মুথপর বিহরই,
মধুর পরশ তব, রাধা শিহরই,
প্রেম-রতন ভরি হদর প্রাণ লই
পদত্লে অপনা থোয়।
কো তুঁহ বোলবি নােয়

কো তুঁহু কোঁ তুঁহু সব জন পুছয়ি,
অমুদিন সঘন নয়ন জল মুছয়ি,
যাচে ভামু, সব সংশয় ঘুচয়ি
জনম চরণপর গোয়।
কো তুঁহু বোলবি মোয়!

भान।

शिख कालाएए। जाएएथमछ।

(ও গো) কে যায় বাশরী বাজায়ে! আমার ঘরে কেহ নাই যে!

(তারে) মনে পড়ে যারে চাই যে!

(७३)

(তার) আকুল পরাণ বিরহের গান বাঁশি বুঝি গেল জানায়ে!

(আমি) আমার কথা তারে জানাব কি করে, প্রাণ কাঁদে মোর তাই যে!

কুস্থমের মালা গাঁথা হল না,

ধূলিতে প'ড়ে শুকায় রে,

নিশি হয় ভোর, রজনীর চাঁদ

মলিন মুখ লুকায় রে!

সারা বিভাবরী কার পূজা করি

যৌবন-ডালা সাজায়ে,

বাঁশিস্বরে হায় প্রাণ নিয়ে যায়

সামি কৈন থাকি হায় রে!

ছোট ফুল।

वांगि खधू गांना गांथि ছোট ছোট ফুলে, त्म क्ल खकारम याम कथाम कथाम, তাই যদি, তাই হোক্, তুঃখ নাহি তায়, তুলিব কুস্থম আমি অনস্তের কুলে! यात्रा थाटक व्यक्तकादत, शांषान कातात्र, आंभात्र ध माना यिन नट्ट गतन जूतन, নিমেষের তরে তারা যদি স্থুখ পার, निष्ट्रत तक्षन-वाथा यि योग ज्ला ! কুদ্র ফুল, আপনার সৌরভের সনে নিয়ে আসে স্বাধীনতা,—গভীর আশ্বাস— यत्न जात्न त्रविकत्र नित्यय-ज्ञशत्न, यत्न जात्न नमूरावत छेनात वाजान। कृष क्ल (मध्य यमि कादा) পড়ে মনে वृष्ट कार, जात वृष्ट काकाम!

योवन अश्।

आयात योवन-श्रक्ष यन एहर यारह विस्थत आकाम! ফুলগুলি গায়ে এদে পড়ে রূপদীর প্রশের মত। পরাণে পুলক বিকাশিয়া বহু কেন দক্ষিণা বাতাস যেথা ছিল যত বিরহিণী সকলের কুড়া'য়ে নিখাস! বসন্তের কুস্থম কাননে গোলাপের আঁথি কেন নত ? জগতের যত লাজময়ী যেন মোর আঁথির সকাশ কাঁপিছে গোলাপ হ'য়ে এসে, মরমের সরমে বিব্রত! প্রতি নিশি ঘুমাই যথন পাশে এসে বসে যেন কেহ সচ্কুত স্থপনের মত জাগরণে পলায় সলাজে ! যেন কার আঁচলের বায় উষায় পরশি যায় দেহ ! শত নৃপুরের রুণুঝুফু বনে যেন গুঞ্জরিয়া বাজে! मित्र প্রাণের ব্যাকুলতা ফুটে ফুটে বকুল মুকুলে; (क व्यामादित करत्रष्ट्र भागल— मृत्ना (कन ठारे व्याथि कूल, 'र्यन कान् উर्वभीत वांथि हात वाह वाकालत मात्य!

क्मिनिक मिलन।

व्याकात्मत प्रशेषिक र'ए प्रशेषानि भाष धन एएए, তুই থানি দিশাহারা মেঘ— কে জানে এসেছে কোথা হ'তে! সহসা থামিল থমকিয়া আকাশের মাঝথানে এসে। দোহাপানে চাহিল গ্জনে চতুথীর চাঁদের আলোতে। कौगालां के वृश्चि मत्न शिष् इश्चाहनां क्रिनां-लानां, यत পড़ে কোন্ ছায়া-দ্বীপে, কোন্ কুহেলিকা-ঘেরা দেশে, कान् मक्ता-मागदात कृत्व छ्षानत छ्षान यानात्राना ! (भारत सिंहि छत् । भारत ना जिलक वितर प्रांट भारत, रिना व'ल मिनिवाद होत्र, अरहना विनया मदि नाष्ट्र । यिनत्तत्र वामनात्र यात्य व्याथयानि हात्तत्र विकाम,— इती চুম্বনের ছোঁয়াছু যি মাঝে যেন সরমের হাস, ত্থানি অলস আঁথি-পাতা, মাঝে স্থ-স্পন আভাস! (मैशित श्रम न'रा मिर्ट जिंग राग, कहिन ना कथा, वल शिन मक्तात्र काश्नि, 'न'रत्र शिन छेषात्र वात्रछ।

গীতোচ্ছাস।

ব বাঁশরী থানি বেজেছে আবার! প্রিয়ার বারতা বুঝি এসেছে আমার বসস্ত কানন মাঝে বসস্ত সমীরে ! তাই বুঝি মনে পড়ে ভোলা গান যত! তাই বৃঝি ফুলবনে জাহুবীর তীরে পুরাতন হাসি গুলি ফুটে শত শত! তাই বুঝি হৃদয়ের বিশ্বত বাদনা জাগিছে নবীন হ'য়ে পলবের মত! জগত কমল বনে কমল-আসনা क्छ मिन পরে বুঝি তাই এল ফিরে! (म এनना এन जोत्र मधुत्र मिनन, "বসস্তের গান হ'য়ে এল তার স্বর, দৃষ্টি ভার ফিরে এল—ধ্কোথা সে নয়ন ? চুম্বন এসেছে তার—কোথা সে অধর ?

खन।

(2)

नात्रीत প्राप्ति (श्रम मधूत कामन, বিকশিত যৌবনের বসস্ত সমীরে কুস্থমিত হয়ে ওই ফুটেছে বাহিরে, সৌরভ স্থায় করে পরাণ পাগল। মর্মের কোমলতা তর্গ তর্ল উथिन উঠেছে यেन श्रनस्त्र श्रीत ! কি যেন বাঁশীর ডাকে জগতের প্রেমে বাহিরিয়া আদিতেছে দলাজ হৃদয়, সহসা আলোতে এসে গেছে যেন থেমে সরমে মরিতে চায় অঞ্চল আড়ালে ! (প্রমের সঙ্গীত যেন বিকশিয়া রয়, উঠিছে পড়িছে धीरत श्रमस्त्रत তালে। হেরগো কমলাসন জননী লক্ষীর— ट्य नाजी-अमध्यत शिव्य मन्ति ! °

खन।

(३)

শবিত্র স্থমের বটে এই সে হেথায়, দেবতা-বিহার-ভূমি কনক-অচল। উন্নত সতীর স্তন স্বরগ-প্রভায় মানবের মর্ত্যভূমি করেছে উজ্জ্বল! শিশু-রবি হোথা হতে ওঠে স্থপ্রভাতে, শ্রান্ত-রবি সন্ধ্যাবেলা হোথা অন্ত যায়। দেবতার আঁখিতারা জেগে থাকে রাতে विभन পविव इंगै विकन मिथदत्र। **जित्र (अश्- अश्व अश्व क्यां विक्र (त्र** সিক্ত করি তুলিতেছে বিশের অধর! बारा मना अथ-अश्व धत्रनीत भरत, व्यमहात्र व्यभाष्टिक व्यमीय निर्जत । ं धतुनीत गात्य शांक अर्ग आडह ह्यि रमव-भिन्न मानरवद्गं के माञ्जूमि।

চুश्रन।

অধরের কাণে যেন অধরের ভাষা । मिंशंत शमग्र (यन मिंदिश भान करत । গৃহ ছেড়ে নিরুদেশ হুটী ভালবাসা তীর্থাতা করিয়াছে অধর-দঙ্গমে! তুইটি তরঙ্গ উঠি প্রেমের নিয়মে ভাঙ্গিয়া মিলিয়া যায় ছুইটা অধরে। ৰ্যাকুল বাসনা হুটী চাহে পরষ্পরে দেহের সীমায় আসি ত্জনের দেখা! প্রেম লিখিতেছে গান কোমল আখরে व्यथत्र थरत्र प्रति प्रश्ना । ত্থানি অধর হ'তে কুস্থম চয়ন, मानिका भाषित्व वृद्धि क्तित शिरम घरत १ ত্রটি অধরের এই সধুর মিগন बुरेषि रामित्र त्राक्षा वामत्र भवन ।

विवमना।

(कल (गा वमन एकल-- चूठां ७ वक्षल। পর শুধু সৌন্দর্য্যের নগ্ন আবরণ স্থর বালিকার বেশ কিরণ বসন। পরিপূর্ণ তমুখানি—বিকচ কমল, कीवत्नत्र योवत्नत्र नावत्गत्र (भना ! বিচিত্র বিশ্বের মাঝে দাঁড়াও একেলা! সর্বাঙ্গে পড়ুক তব চাদের কিরণ मर्काटक मलग्र वाग्नू कक़क (म (थला। षमीय नीलिया यात्य रुख नियशन তারাময়ী বিবসনা প্রকৃতির মত। অতমু ঢাকুক মুখ বদনের কোণে তমুর বিকাশ হেরি লাজে শির নত। व्याञ्चक् विभव छेचा मानव छवतन, লাজহীনা পবিত্ৰতা—শুজু বিৰসনে 🔭

विछ।

কাহারে জড়াতে চাহে হুটি বাহু লতা। काशादा काँ मिया वर्ण (यउना (यउना। (क्यान श्रकाम करत वार्क्न वामना, কে গুনেছে বাহুর নীরব আকুলতা! কোথা হতে निय़ আসে হৃদয়ের কথা गारम नित्य नित्य याम श्रूनक जक्दत्र!, পরশে বহিয়া আনে মরম বারতা মোহ মেথে রেখে যায় প্রাণের ভিতরে ! कर्थ रु'ए উতারিয়া যৌবনের মালা ष्रेषि वात्रु एव धित कूनि (मन्न गतन। शृष्टि वाङ् विङ् ष्यात्न श्रन एवत् त्राथ पित्र योग (यन চत्रावत्र जला! नजारम थाकूक तूरक किन्न जानिकन, हिँए।ना हिँए।ना एि वाह्य वक्षन।

চরণ।

ত্থানি চরণ পড়ে ধরণীব্র গায়। ত্থানি অলস রাঙা কোমল চরণ। শত বসস্তের স্মৃতি জাগিছে ধরায়, শতলক্ষ কুস্থমের পর্শ-স্বপন! শত বসম্ভের যেন ফুটস্ত অশোক ঝরিয়া মিলিয়া গেছে হুটি রাঙা পায়! প্রভাতের প্রদোষের ছটি স্থ্যলোক অস্ত গেছে যেন ছটি চরণ ছায়ায়! योवन मन्नीज পথে यেजেছে ছড়ায়ে, न्श्र काँ मिया यदा ठवन कड़ार्य, न्তा नना वैधि। एयन यधूत योशीय । হোথা যে নিঠুর মাটি, গুষ্ক ধরাতল,— **এ**म भा श्रमाय अम, सूबिष्ट । रथाय লাজ-রক্ত লালীসার রাঙা শতদল।

श्नरा ञाकाना।

व्यागि धता निष्त्रिष्ट् भा व्याकात्मत्र भाशी, নয়নে দেখেছি তব ন্তন আকাশ! ত্থানি অ'থির পাতে কি রেখেছ ঢাকি হাদিলে ফুটিয়া পড়ে উষার আভাদ ! হৃদয় উড়িতে চায় হোথায় একাকী वांथि-তারকার দেশে করিবারে বাস। ঐ গগনেতে চেয়ে উঠিয়াছে ড়াকি হোপায় হারাতে চায় এ গীত-উচ্ছাস ! তোমার হৃদয়াকাশ অসীম বিজন— वियला नीलिया छात्र माख स्कूमात्री, थे भूना गांद्य यि नित्र (यटण भाति আমার ত্থানি পাথা কনক বরণ! शमग्र ठांडक श्राप्त ठात्व प्रक्रांति, श्वमत्र চ कांत्र होत्व श्वित्र क्षेत्र ।

व्यक्ष्टल त्र वाकाम।

পाশ मिर्य राग हिन हिक्छत थाय, व्यक्ष्टात्र প্रान्थानि ঠেকে গেল গায়, শুধু দেখা গেল তার আধথানি পাশ, শিহরি পরশি গেল অঞ্লের বায়। অজানা श्रमग्र-यत्न উঠেছে উচ্ছাস, অঞ্জলে বহিয়া এল দক্ষিণে বাতাস, সেথা যে বেজেছে বাঁশি তাই শুনা যায় সেথায় উঠিছে কেঁদে ফুলের স্থবাস। কার প্রাণথানি হ'তে করি হায় হায় বাতাদে উড়িয়া এল পরশ আভাষ ৷ ওগো কার তমুখানি হয়েছে উদাস! ওগো কে জানাতে চাহে মরম বারতা! मित्र शिव नर्कात्मत्र व्याकूव निश्वाम, वल शिव निर्वाद्भित्र कृति काल कथा!

(मदश्त भिलन।

প্রতি অঙ্গ কাঁদে তব প্রতি অঙ্গ তরে। প্রাণের মিলন মাগে দেহের মিলন। হৃদয়ে আচ্ছন্ন দেহ হৃদয়ের ভরে মূরছি পড়িতে চায় তব দেহ পরে! তোমার নয়ন পানে ধাইছে নয়ন, অধর মরিতে চায় তোমার অধরে ! তৃষিত পরাণ আজি কাঁদিছে কাতরে তোমারে সর্কাঙ্গ দিয়ে করিতে দর্শন। श्रम्य नूकान चाट्ह एएट्स नायद চির দিন তীরে বসি করি গো ক্রন্ন, সর্বাঙ্গ ঢালিয়া আজি আকুল অন্তরে (मर्ट्य त्रश्मा यांत्य रहेव यशन। আমার এ দেহ মন চির রাত্রি দিন তোমার সর্কাঙ্গে যাবে হইয়া বিলীন।

তর।

ওই তমুথানি তব আমি ভালবাসি। व প्रान তোমার দেহে হয়েছে উদাদী। निनिद्यु छन्मन छन छन क्न हुटि পড़ে थरत थरत योवन विकामि। চারিদিকে গুঞ্জরিছে জগত আকুল मात्रा निमि मात्रा मिन खमत्र भिभामी। ভালবেদে বায়ু এদে হ্লাইছে হল, মুথে পড়ে মোহ ভরে পুর্ণিমার হাসি। পূর্ণ দেহথানি হতে উঠিছে স্থবাস। यति यति काथा (मरे निज्ज निनम्, े कांग्रेग भग्रत्म राषा किलाइ नियान **७** छू- ঢाका मधूमाथा विखन क्षम ! अरे (मर्थानि वृत्क कूर्न त्नव, वाना, ठकूर्मण नगरखन्न धकगाहि माणा।

শ্বতি।

७३ (षर পोत्न (हर्य পড़ে মোর মনে যেন কত শত পূর্ব্ব জনমের স্মৃতি! मश्य श्रांन' प्रथ जाहि उ नग्रत, जम जमास्त्रित (यन वमस्त्रित गीजि! বেন গো আমারি তুমি আত্ম-বিশ্মরণ, অনম্ভ কালের মোর স্থুখ গুঃখ শোক; কত নব জগতের কুস্থম কানন, क्छ नव আকাশের চাঁদের আলোক; क्छ निवरमत्र তूमि वित्रस्त्र वाथा, क्छ त्रक्नीत जूमि धागरत्रत माक, সেই হাসি সেই অঞ্জ সেই সব কথা मधुत मृत्रि धित्र (मथा मिन आक! তোমার মুখেতে চেয়ে তাই নিশি দিন जीवन समूद्र यन रुख्य विनीन!

হৃদয়-আসন।

रकायन प्रथानि वाह मत्राय नजारत्र বিকশিত স্তন হটি আগুলিয়া রয়, তারি মাঝখানে কিরে রয়েছে লুকামে অতিশয় স্যত্ন পোপন হাদ্য়! त्मरे नित्राणाम, त्मरे कामल जामतन, তুইখানি স্বেহ্ন্ট স্তনের ছায়ায়, কিশোর প্রেমের মৃত্ন প্রদোষ কিরণে আনত আঁথির তলে রাখিবে আমায়! কতনা ষধুর আশা ফুটিছে সেথায়— গভীর নিশীথে কত বিজন কল্পনা, উদাস निश्वाम वांग् वमञ्च मक्तांग्र, रगांश्रत हैं। मिनी व्राट्ड इंडि ज्यक्ष कर्गा! তারি মাঝে আমারে কি রাধিবে যতনে श्रम्दत्रव स्वयभूत • स्वर्शन-नेत्रतन !

কম্পনার সাথী।

यथन कूस्रम वरन िकत्र अकाकिनी, धताय न्होरक পড़ে পূর্ণিমা याমिनी, দক্ষিণে বাতাসে আর ভটিনীর গানে শোন যবে আপনার প্রাণের কাহিনী;— यथन भिडेलि फूल কোलथानि ভরি, হটি পা ছড়িয়ে দিয়ে আনত বয়ানে ফুলের মতন হুটি অঙ্গুলিতে ধরি यांना गाँथ' मस्त्रदिना खन्खन् जातः ;— यथार्ट्स এर्क्मा यर्व वाजाय्रत वरम, नग्रत यिलाएं ठांग्र स्पृत व्याकाम, कथन् योष्ठम थानि পড़ে यात्र थ'त्न, कथन शपत्र হতে উঠে দীর্ঘশাস, कथन् चटा कां पि न्यानत भाष्ठ, তथन कामि कि मिथ शांकि তব माथ !

হাসি।

স্থাবুর প্রবাদে আজি কেনরে কি জানি रक्तवि পড়িছে मनে তার হাসিধানি। कथन् नाभिया (शल. मक्तां व जभन, कथन् थामिया (अल मानदात्र वाणी! কোথায় ধরার ধারে বিরহ-বিজন একটি মাধবী লভা আপন ছায়াভে ত্টি অধরের রাঙা কিশলয়-পাতে হাসিটি রেথেছে ঢেকে কুঁড়ির মতন ! সারারাত নয়নের সলিল সিঞ্চিয়া রেথেছে কাহার তরে যতনে সঞ্জিয়া ! रम श्रीमिष्टि एक जानिया कतिरव हमन, লুক এই জগতের সবারে বঞ্চিয়া ! ख्थन ज्थानि राति मनिया वाँ जिया ज्ञित्य व्याप्त क्षि अकृषि ठूषन ।

ठिज्ञ १ निक्रिं त्रमभीत हिज्

मात्रात्र त्राद्य द्राक्षा अत्नाय जाधात চিত্রপটে সন্ধ্যাতারা অস্ত নাহি যায় ! এলাইয়া ছড়াইয়া গুচ্ছ কেশভার বাহুতে মাথাটা রেখে রমণী ঘুমায়! চারিদিকে পৃথিবীতে চির জাগরণ কে ওরে পাড়ালে ঘুম তারি মাঝখানে 🛚 কোথা হ'তে আহরিয়া নীরব গুঞ্জন চিরদিন রেথে গেছে **ওরি কাণে** কাণে ১ ছবির আড়ালে কোথা অনস্ত নির্বার नीत्रव वर्षत्र गान्न शिष्ट्रह वित्रिया। ित्रिक्ति कानत्वद्र नीत्रव मर्गत्र। मञ्जा जित्रिमिन चाट्य माँ पादत्र मगूरथः रमभि ভाकित्व चूमत्यद्राम मित्रिया नुक्कत वमनथानि जूल मित्व नुक

কণ্পনা-মধুপ।

প্রতিদিন প্রাতে শুধু শুণ্ শুণ্ গান, লালসে অলস-পাথা অলির মতন। विकल ऋमग्र लाय भागल भन्नान **टकाथाय कतिर**ङ याय मधू **अरम्यश**! বেলা ব'হে যায় চলে—প্রাপ্ত দিনমান তরুতলৈ ক্লান্ত ছায়া করিছে শয়ন, ম্রছিয়া পড়িতেছে বাঁশরীর তান, भिष्ण-तृष्ठ मृपिष्ट नयन। कूञ्चम मत्मत (वफ़ा, তात्रि मात्स ছाया, (मथा व'रम कति जामि क्म मधू भान ; বিজ্ঞনে সৌরভমন্নী মধুমন্নী মায়া তাহারি কুহকে আমি করি আত্মদান; द्रव्याथा পाथा नद्र चद्र किद्र चानि . , जाशन मोत्राक शिक जाशनि छेतानी !

পূर्ণ भिलन।

कि निमिन कैंकि मिन भिनातन छात्र, যে মিলন ক্ধাতুর মৃত্যুর মতন! ण ७ ल ज्ञा म ७ वज्ज म ७ ज्ञा वज् । এ তরুণ তমুখানি লহ চুরি করে, অাখি হতে লও খুম, ঘুমের স্বপন। জাগ্রত বিপুল বিশ্ব লও তুমি'হরে অনস্তকালের মোর জীবন মরণ ! विजन वित्यंत्र गांद्य, भिनन भागात, নির্বাপিত স্থ্যালোক লুপ্ত চরাচর, লাজমুক্ত বাসমুক্ত হটি নগ প্রাণে, তোমাতে আমাতে হই অসীম স্থলর। এ কি ত্রাশার স্বপ্ন হায় গো ঈশ্বর, তোমা ছাড়া এ মিলন আছে কোন্ধানে।

व्याखि।

স্থশ্ৰমে আমি স্থি শ্ৰাস্ত অতিশয়; পড়েছে শিথিল হ'য়ে শিরার বন্ধন। व्यमश् कांमन ठिक् कूञ्चम नम्मन, कुस्रम (রণুর সাথে হয়ে যাই লয়। স্বপনের জালে যেন পড়েছি জড়ায়ে! যেন কোন অন্তাচলে সন্ধ্যা-স্বপ্নময় রবির ছবির মত যেতেছি গড়ায়ে; ऋपृत्त भिलिया यात्र निथिल-निलय। ডুবিতে ডুবিতে যেন স্থথের সাগরে কোথাও না পাই ঠাই, খাসক্ষ হয়, পরাণ কাঁদিতে থাকে মৃত্তিকার তরে। এ যে সৌরভের বেড়া, পাষাণের নয়; (कमत्न ভाञ्जिष्ड रहा ভावित्रा ना शाहे, অসীম নিজার ভারে পড়ে আছি তাই।

वनी।

मां अथूल मां अप्रि ख अप वाह भाम! চুম্বন মদিরা আর করায়োনা পান! কুস্থমের কারাগারে রুদ্ধ এ বাতাস, ছেড়ে দাও ছেড়ে দাও বদ্ধ এ পরাণ ! কোথায় উষার আলো কোথায় আকাশ! এ চির পূর্ণিমা রাত্রি হোক্ অবসান! আমারে ঢেকেছে তব মুক্ত কেশপাশ, তোমার মাঝারে আমি নাহি দেখি ত্রাণ ! আকুল অঙ্গুলি গুলি করি কোলাকুলি গাঁথিছে সর্বাঙ্গে মোর পরশের ফাঁদ। चूमरवादा मृज পान मिथ मूथ जूनि खधू অविज्ञाम-शिम এकथानि हान ! श्वाधीन कतिया मां ७ ८वंथना व्यामाय স্বাধীন হৃদয়খানি দিব ত্ব পায়!

কেন ?

কেন গো এমন স্বরে বাজে তবে বাঁশি, यधूत ञ्चनत क्राप किंदम अर्फ शिया, রাঙা অধরের কোণে হেরি মধু হাসি श्रूण क्योवन क्न উঠে विक्थिया! क्न उन्न राष्ट्र एडाद्र थर्ता मिट्ड डाग्न, धात्र खान, इिं काटमा अंधित উদ্দেশে, হায় যদি এত লাজ কথায় কথায়, श्य यपि जि अशिक नित्यत्य नित्यत्य ! दिन कार्ष्ट्र जारक यिन भारक व्यवसान, (कन दत्र कामात्र खाव निव यमि ছात्रा, षाक राट जूटन नित्र क्टन पिटन कान এরি তরে এত তৃফা, এ কাহার মায়া। (थना यिन, दर्न दर्न मर्गाएकमी (थना !

भिश

क भार क मिनु शांक, क मांग्रा मिनांग्र! কিছুতে পারে না আর বাঁধিয়া রাখিতে। কোমল বাছর ডোর ছিন্ন হয়ে যায়, यित्रा उथान नारका यित्र-वाथिए ! क्टिक काद्य माधि हित्न व्याधात्र निर्मात्र। क्न काछ। मान करन गारक ना शाबी ए ! काथा (मरे शामिखा उ इसन-ज्यिज बाडा शृष्णपूर्क (यन श्रिक्ष व ष्या । কোথা কুস্থমিত তম্ পূর্ণ বিকশিত কম্পিত পুলক ভরে, যৌবন কাতর! ज्थन कि मत्म পড़ে সেই गाकूनजा, मिटे छित्र शिशांत्रिङ योवत्नत कथा, त्मरे लोग-পतिभूर्ग मत्नण व्यनम, मत्न (পाष्ड्र शिन जात्म १ कात्म जात्म कन १

পবিত্র প্রেম।

कूँ योना, कूँ योना ७'त्र, में ज़िं अ मित्रिया। भ्रान कविया ना जात मिन পর্শে! ७२ (५४ जिल्न जिल्न (यरजस् मित्रां, বাদনা-নিশ্বাদ তব গরল বরুষে ! जान ना कि शमियात्य कृष्टिष्ट त्य कृष, थ्वां अ दक्षित्व जादत्र कृष्टित्व ना आता! कान ना कि সংসারের পাথার অক্ল, कान ना कि कीवरनत्र भथ अक्षकात ! আপনি উঠেছে ওই তব ঞ্ব তারা, व्याशनि कृटिष्ट् कृण विधित्र कुशात्र ; माध करत्र एक व्याक्तित्त रूटव भथरात्रा ! नाथ करत्र ध कुन्सम एक मनिदव भाग ! ट्य व्यक्तीश प्यांटमा दूतदव छाट्य दक्षम यात्र, यादत जानवामः जादत्र कत्रिष्ट् विनाम।

পবিত্র জীবন।

गिष्ट शिंम, शिष्ट वांनि, शिष्ट ध योवन, মিছে এই দরশের পরশের খেলা! टिय एष्थ, পविज अभागव खीवन, কে ইহারে অকাতরে করে অবহেলা! ভেদে ভেদে এই মহা চরাচর স্রোতে क जात्न भा वानियाष्ट्र कान्थान रख, কোথা হতে নিয়ে এল প্রেমের আভাস, कान् अक्षकात (ভिष উঠिল আলোতে! व नट्ट रथनात धन, योवतनत्र जान, त्वारणा ना देशंत्र कारन प्यार्वरभंत्र वाणी, नट्ट नट्ट ७ তোমার বাসনার দাস, তোমার কুধার মাঝে আনিও না টানি ! এ তোমার ঈশবের মঙ্গল আখাস, মুর্গের আলোক তব এই মুখ্থানি!

भत्रीिका।

এস, ছেড়ে এস, স্থি, কুস্তুম শ্রম ! বাজুক্ কঠিন মাটি চরণের তলে। কত আর কহিবে গো বসিয়া বিরলে আকাশ-কুস্থমবনে স্বপন চয়ন! দেখ ওই দুর হতে আদিছে ঝটিকা, अश्रतीका (एटम याति थ्र अयः कर्ण! দেবতার বিদ্যুতের অভিশাপ শিখা महित्व जाँधात निजा विमन जनता। চল গিয়ে থাকি দোঁহে মানবের সাথে, ञ्चथ दृःथ लएम मत्त गाँथिए जानम, হাসি কান্না ভাগ করি ধরি হাতে হাতে সংসার সংশয় রাত্রি রহিব নির্ভয়। ञ्चथ-(ब्रोज-भन्नी हिका नट्ट वामञ्चान, ियलाय मिलाय वैलि छ एम कैं। १

भान त्राना।

এ खधू जनम गांत्रां, এ खधू (मर्घत्र (थनां ! এ শুধু মনের সাধ বাতাসেতে বিসর্জন; ध ७५ व्यापन मत्न माना (गैर्थ ছिँए रक्ना, নিমেষের হাসিকান্না গান গেম্বে সমাপন। শ্যামল পল্লব পাতে রবিকরে সারাবেলা আপনার ছায়া লয়ে খেলা করে ফুলগুলি, এও সেই ছায়া-থেলা বসস্তের সুমীরণে ! কুহকের দেশে যেন সাধ ক'রে পথ ভুলি হেথা হোথা ঘুরি ফিরি সারাদিন আনমনে! कारत (यन (मव' व'ला (काशा (यन क्ल जूनि, नकाित्र यान कृत छ एए सात्र वरन वरन। ध (थला (थलित शंत्र (थलांत्र माथी (क चाहि १ जूल जूल भान भारे— एक त्यादन, एक नारे त्या यि किছू गत्न পড़ে, यि किश् आत्म कोष्ट्!

नक्रांत विनाश।

मक्ता यांग्र, मक्ता कित्त ठांग्र, मिथिन क्वती পড़ थूल,— रवा रवा विकास विकास विवास विकास विका চরণের পরশ-রাঙিমা রেথে যায় যমুনার কূলে;— নীরবে-বিদায়-চাওয়া-চোথে, গ্রন্থি-বাঁধা রক্তিম ত্কুলে व्याधारतत भान-वध् याग वियादमत वामत्र-भगदन। সন্ধাতারা পিছনে দাড়ায়ে চেয়ে থাকে আকুল-নয়নে। यमूना काँ पिए ठाइ द्वि किना काँ एमना कर्श जूल, বিস্ফারিত হৃদয় বহিয়া চলে যায় আপনার মনে। बार्य गांख याउँवन रू गजीत निश्वाम रकत्न धता। मश्र श्री मैं। एं हिल जानि नन्दन स्त्रज्य मृत्ल, टिए थोर्क পन्टियत পথে जूल यात्र व्यानीर्काम करा। निनीशिनी त्रश्नि कांशिया यमन ঢाकिया এলোচুলে। कार्यभनात्र मगिधि गोबाद्र निर्दाणा नीत्रद कदत्र वाम ॥

রাতি।

জগতেরে জড়াইয়া শতপাকে ষামিনী-নাগিনী, আকাশ পাতাল জুড়ি ছিল প'ড়ে নিদ্রায় মগনা, আপনার হিম দেহে আপনি বিলীনা একাকিনী। মিটি মিটি তার কায় জলে তার অন্ধকার ফণা। উষা আসি মন্ত্র পড়ি বাজাইলা ললিত রাগিণী রাঙা আঁথি পাকালিয়া সাপিনী উঠিল তাই জাগি, একে একে খুলে পাক, আঁকি বাকি কোথা যায় ভ পশ্চিম সাগর তলে আছে বুঝি বিরাট গহ্বর, সেথায় ঘুমাবে ব'লে ডুবিতেছে বাস্থকি-ভগিনী, মাথায় বহিয়া তার শত লক্ষ রতনের কণা; শিয়রেতে সারাদিন জেগে রবে বিপুল সাগর, মিলি কত নাগবালা স্বপ্নমালা করিবে রচনা।

देवज्यभी।

অশ্র স্রোতে স্ফীত হয়ে বহে বৈতরণী: চৌদিকে চাপিয়া আছে অাধার রজনী। পূর্বতীর হ'তে হুছ আসিছে নিশাস যাত্রী লয়ে পশ্চিমেতে চলেছে তরণী! यात्व यात्व (पथा (पश विद्याक विकाभ, क्टिकादा नाहि एएन व'रम नड मिरत। গলে ছিল বিদায়ের অশ্র-কণা হার ছिन्न र'रत्न अरक अरक करत शर् नीरत। जे वृत्रि (पथा याग्र ছाग्ना পর পার, অন্ধকারে মিটি মিটি তারা দীপ জলে ! হোথায় কি বিশারণ, নিঃস্বপ্ন নিদ্রার भवन विषय पिटव सवा क्ल पटन! अथवा अकृत्म ७४ अनन्छ तकनी एक कि कर्वधात-विशेन खत्री।

यानव-श्रवदात वानना।

निमौर्थ द्राया (कर्ग ; तिथ व्यनिमिर्थ, लक क्रारव्य नाथ भूत्य छ ए यात्र। ়কত দিক হ'তে তারা ধায় কত দিকে। কত না অদৃশ্য-কায়া ছায়া-আলিঙ্গন বিশ্বময় কারে চাহে করে হায় হায়! কত স্বৃতি খুঁজিতেছে শাশান শয়ন; অন্ধকারে হের শত তৃষিত নয়ন ছায়াময় পাখী হ'য়ে কার পানে ধায়! ক্ষীণশ্বাস মুম্যু র অতৃপ্ত বাসনা धत्रीत कृत्न कृत्न यूतिया त्वाय ! উদ্দেশে ঝরিছে কত অশ্রবারি কণা চরণ খুঁজিয়া তারা মরিবারে চায়! কে গুনিছে শত কোটি হদয়ের ডাক! निणीषिनी सक र'रत्र तरत्र ए अवाक!

সিশ্ব গর্ভ।

উপরে স্রোতের ভরে ভাসে চরাচর, नौन नम्दान भरत नृष्ण क'रत माता। কোপা হ'তে ঋরে যেন অনস্ত নির্মর यदा जालां क्त कना ति नि जाता! यदा প्रान, यदा गान, यदा প्रमधाना পূর্ণ করিবারে চায় আকাশ সাগর! मश्मा (क पूर्व यात्र जनवित्र भात्रा, ছুয়েকটি আলো রেখা যায় মিলাইয়া, তথন ভাবিতে বসি কোথায় কিনারা, কোন্ অতলের পানে ধাই তলাইয়া! निस्न कार्शि निम्नू गर्ड खक व्यक्षकात्र। काथा नित्व यात्र जात्ना, (थरम यात्र गीज, কোথা চিরদিন তরে অসীম আড়াল! কোথায় ডুবিয়া গেছে অনস্ত অতীত!

कुष जनख।

অনন্ত দিবদ রাত্রি কালের উচ্ছাস তারি নাঝথানে শুধু একটা নিমেষ, একটী মধুর সন্ধ্যা, একটু বাতাস---মৃহ আলো আঁধারের মিলন আবেশ-তারি মাঝথানে শুধু একটুকু জুঁই,— একটুকু হাদি মাথা দৌরভের লেশ— একটু অধর তার ছুঁই কি না ছুঁই---षांभन षानम न'रा उठिराउ क्रिंटे, আপন আনন্দ ল'য়ে পড়িতেছে টুটে! সমগ্র অনস্ত ঐ নিমেষের মাঝে একটা বনের প্রান্তে জুঁই হয়ে উঠে। (यमनि পणक हुए क्ल व्याद यात्र অনন্ত আপনা মাঝে আপমি মিলায়!

मत्रुज ।

কিসের অশান্তি এই মহা পারাবারে! সতত ছিঁড়িতে চাহে কিসের বন্ধন! ष्यवाक षम् वेवानी वाक कतिवादत শিশুর মতন সিন্ধু করিছে ক্রন্দন! যুগযুগান্তর ধরি যোজন যোজন क्रिया क्लिया উঠে উত্তাল উচ্ছ। मः অশান্ত বিপুল প্রাণ করিছে গর্জন, নীরবে শুনিছে তাই প্রশান্ত আকাশ। আছাড়ি চূর্ণিতে চাহে সমগ্র হাদয় कठिन পাষাণময় ধরণীর তীরে, জোয়ারে সাধিতে চায় আপন প্রলয়, ভাঁটায় মিলাতে চায় আপনার নীরে! অন্ধ প্রকৃতির হুদে মুত্তিকায় বাঁধা সতত ত্লিছে ওই অশ্র পাথার, ख्रेश्रशी वामना शाम शाम शाम वाधा, कॅंकिशं ভाসাতে চাহে জগৎ সংসার। শাগরের কণ্ঠ হতে কেড়ে নিয়ে কথা

শাধ যায় ব্যক্ত করি মানব ভাষায়;

শাস্ত করে দিই ওই চির ব্যাকুলতা,

সমুদ্র বায়ুর ওই চির হায় হায়!

একটি সঙ্গীতে মোর দিবস রজনী
ধ্বনিবে পৃথিবী-ঘেরা সঙ্গীতের ধ্বনি!

অভ্যান রবি।

আজ কি তপন তুমি যাবে অস্তাচলে না গুনে আমার মুখে একটিও গান! माँ ज़ां ७ त्यां, विनादयं व क्टो कथा वत्य আজিকার দিন আমি করি অবসান গু থাম ওই সমুজের প্রাম্ভ-রেথা পরে, মুথে মোর রাথ তব একমাত্র জাঁথি! निवरमत रन्य পरन निरमस्त्र जरत তুমি চেয়ে থাক আর আমি চেয়ে থাকি ! ত্জনের অাথি পরে দায়াহ্ আঁধার অ'থির পাতার মত আস্থক মুদিয়া, গভীর ডিমির-মিশ্ব শান্তির পাথার निवारिय रफलूक व्यांकि इपि मीश्र श्रिया! रणय शान माक्र कद्त्र त्थरम शारह शाथी, चारात्र क गानशानि हिन खबू बाकी !

ञ्छाठल्य প्रश्रीत्।

(मक्ता मूर्यात প্রতি।) আমার এ গান তুমি যাও সাথে করে ন্তন সাগর তীরে দিবসের পানে! সায়াহের কুল হতে যদি ঘুমঘোরে এ গান উষার কূলে পশে কারো কানে ! সারারাত্রি নিশীথের সাগর বাহিরা স্বপনের পরপারে যদি ভেদে যায় ! প্রভাত পাখীরা যবে উঠিবে গাহিয়া আমার এ গান তারা যদি খুঁজে পায় ! গোধ্লির তীরে বদে কেঁদেছে যে জন (करनाष्ट्र जाकार्त (हरम जन जन कड, তার অশ্রু পড়িবে কি হইরা ন্তন नव প্রভাতের মাঝে শিশিরের মত! मात्राद्भत कुँफ्छिम जाभना द्रेषिया खाडा कि जून रूप छैठं ना कृषिया !

প্রত্যাশা।

সকলে আমার কাছে যত কিছু চায় मकत्वदा आिय जाश (পরেছি कि निष्ठ ! यागि कि निर्नि काँकि कड करन राम, রেথেছি কত না ঋণ এই পৃথিবীতে! আমি তৰে কেন বকি সহস্ৰ প্ৰলাপ, সকলের কাছে চাই ভিক্ষা কুড়াইতে ! এক जिन ना পाইলে मिरे অভিশাপ অমনি কেনরে বিস কাতরে কাঁদিতে! হা ঈশ্বর, আমি কিছু চাহিনাক আর, ঘুচাও আমার এই ভিক্ষার বাসনা! যাথায় বহিয়া লয়ে চির ঋণভার "পाইनि" "পाইनि" বলে আর কাঁদিব না ! তোমারেও মাগিব बा, ज्याम काँमिन ! ज्याननादत्र मिटन जूमि जानिदव जानि !

अश्वक

পারি না করিছে আমি সংসারের কাজ, লোক মাঝে আঁখি তুলে পারি না চাহিতে! ভাসায়ে জীবন তরী সাগরের মার তরঙ্গ লঙ্খন করি পারি না বাহিতে ! পুরুষের মত যত মানবের সাথে योग मिटल পात्रिमांक लाग्न निक वल, সহস্র সম্বন্ধ শুধু ভরা হুই হাতে বিফলে শুকার যেন লক্ষণের ফল। वाभि गौषि वाशनात ठातिनिक चित्र স্ক্র রেশমের জাল কীটের মতন। मध थोकि ञाननात मधूत जिमित्त, দেখি না এ জগতের প্রকাও জীবন ! क्नि यात्रि यात्रनात्र व्यक्ति । मुक्ति भाजात मार्स कैंग्लि चक्क चौथि।

অক্ষতা।

এ যেন রে অভিশপ্ত প্রেতের পিপাদা, मिन त्राष्ट्र भए ७४ (पर नारे! এ কেবল হৃদয়ের হুর্বল হ্রাশা সাধের বস্তর মাঝে করে চাই চাই! ছটি চরণেতে বেঁধে ফুলের শৃঙ্খল क्विन भरथत्र भारत एउ वरम शाका, यानव कीवन (यन मकलि निकल, বিশ্ব যেন চিত্রপট, আমি যেন আঁকা। চিরদিন বুভুক্ষিত প্রাণ হতাশন আমারে করিছে ছাই প্রতি পলে পলে; মহত্বের আশা শুধু ভারের মতন ष्यादत पूर्वादय भिन्न खड़ एवत छ । 'কোথা সংসারের কাজে জাগ্রত হৃদয় ! "কোথারে সাহস মোর অস্থি মজ্জাময়।

জাগিবার চেফা।

या (कर कि व्याह (यांत्र, काष्ट्र এम তবে, পাশে ব'দে স্নেহ ক'রে জাগাও আমায়! अरक्षत नमाधि मार्य वैकिया कि रूटन, यूबिएडिइ जागिवाद्य, — जांशि ऋक श्रा ! (एका ना (एका ना भारत क्षेत्रकांत्र मार्य), স্থেময় আল্দ্যেতে রেখোনা বাঁধিয়া, আশীর্কাদ ক'রে মোরে পাঠাও গো কাজে, পিছনে ডেকোনা আর কাতরে কাঁদিয়া! भात्र वरण काहारत्र अक्त ना कि वण! यात्र প্राप्त नाकि क्ट नव প्राप्त। कक्रणा कि खधू (क्रिल नग्रानत क्रम, ख्यम कि **घ**टत्रत कार्ण गार्ट ख्र्यू गान ! **जरवरे** चूहिरव सात्र स्वीवत्नत्र नास ষদি মা করিতে পারি কারো কোন কাজ !

किराज्य व्यव्या

शाम शाहि वरण रकन जरकांत्र करा ! खधू गाहि वरण रकन काँ मि ना मतरम ! খাঁচার পাখীর মত গান গেয়ে মরা, এই কি মা আদি অস্ত মানব জনমে ! স্থ নাই-স্থ নাই-শুধু মর্ম ব্যথা-মরীচিকা-পানে শুধু মরি পিপাসায়, (क (मश्रांत्न প্রলোজন, শৃত্য অমরতা; थारिन म'रत गानि किरत (वैंट थोको योग ! কে আছ মলিন হেথা, কে আছ তুর্বল, त्यादत ट्यायादन याद्य कत त्या व्याख्यान, वादिक अकटल वरम रक्ति अक छन, দূর করি হীন গর্ক, শূন্য অভিযান! তার পরে একদাথে এস কাজ করি, **८क्विन विकाश गान मृद्र श**ित्रहित्र।

रिज्दन!

আমারে ডেকোনা আজি এ নহে সময়, একাকী রয়েছি হেথা গভীর বিজন, কৃধিয়া রেখেছি আমি অশাস্ত হৃদয়, গুরস্ত হৃদয় মোর করিব শাসন! मानदवत मास्य शिल ध रय ছोड़ा शाय, मरुख्यत्र (कांनारुल रुग्न भथराता, लूक मृष्टि यां भाग वां कि एं ठाय, চিরদিন চিররাত্রি কেঁদে কেঁদে সারা! ७९ जना कत्रिव তারে विकास वित्राल, এক্টুকু घूमाक् (म काँ निया काँ निया, शांभन विश्न कारन याकांन यकतन প্রকৃতি জননী,তারে রাখুন্ বাঁধিয়া! भाख (ञ्र काल वल भिथुक् म स्वरं আমারে আজিকে তোরা ডাকিদ্নে কেছ

मिश्व छीदत।

হেথা নাই ক্ষুদ্র কথা, তুচ্ছ কানাকানি, ধ্বনিত হতেছে চির-দিবসের বাণী। চির দিবদের রবি ওঠে অন্ত যায়, চির দিবদের কবি গাহিছে হেথায় ! थत्र नीत्र हा ति कि की भाग्ना शान সিমু শত তটিনীরে করিছে আহ্বান, ट्यांग्र (मिथ्टन ८ ह्य जाभनांत्र भारन वृहे तिर्थ कन जारम, दर्ने प उर्छ প्रान ! শত যুগ হেথা বদে মুথপানে চায়। विभाग आकार्य भारे श्रमस्त्रत माड़ा ! তীত্ৰ ৰক্ত কুদ্ৰ হাদি পায় যদি ছাড়া नवादा जानिए इस्क व्क दबर्फ याग्र, স্বারে ক্রিতে ক্ষ্মা আপ্নারে ছাড়া !

সত্য।

(5)

ভয়ে ভয়ে ভ্রমিতেছি মানবের মাঝে श्रम एशत व्याप्ता हेकू नित्य शिष्ट या ; क कि वरण जारे खरन मित्र जिहि मार्क, कि रुप्र कि रुप्र (ভবে ভয়ে প্রাণ দোলে! "আলো" "আলো" शूँ छ मित्र পরের নয়নে, "আলো" "আলো" भूँ एक भूँ एक काँ मि পথে পথে, व्यवस्थि खर्म পि धृ वित भग्रान ভয় হয় এক পদ অগ্রসর হতে! विख्य बालाक नित्र छात्र अक्रकात, হাদি যদি ভেঙ্গে যায় সেও তবু ভাল, य शृद्ध कानामा नारे मि क कात्राभात्र, (ज्ञ एक , जामित्वक, अन्नत्भन जाता। हांग्र हांग्र (कांशा मिट्टे अधिलाज (कांकि ! চলিব সরল পথে অশক্ষিত গতি !

मञा।

(२)

জালায়ে অঁধার শ্ন্যে কোটি রবি শশি माँ पार्व तरम् । विकास किया विकास किया विकास विक স্থগভীর শাস্ত নেত্র রয়েছে বিকশি, চির স্থির শুল্র হাসি, প্রসন্ন অধর। व्यानत्म व्याधात्र मदत्र हत्रन शत्रिन, लाज ভग लाज ভग्न भिलारेया याग्र, আপন মহিমা হেরি আপনি হর্ষি চরাচর শির তুলি তোমা পানে চায়! व्यागात शमत्र मीश वांधात द्थात्र, धृणि रू जूणि अद्र मा अ ज्ञाना रेया, ওই ধ্রুব তারাথানি রেথেছ যেথায় (मरे गगत्नत व्यास्त्र त्राथ सूनारेशा। চিরদিন জেগে রবে, নিবিবে না আর, वित्रिमिन मिथार्टर याँधादित भात!

আত্মভিমান।

আপনি কণ্টক আমি, আপনি জর্জার। আপনার মাঝে আমি শুধু ব্যথা পাই। मकलात्र काष्ट्र किन याहिला निर्जत, গৃহ নাই, গৃহ নাই, মোর গৃহ নাই! অতি তীক্ষ অতি কুদ্ৰ আত্ম-অভিমান সহিতে পারে না হায় তিল অসম্মান! আগে ভাগে সকলের পায়ে ফুটে যায় कुज राम शाष्ट्र (कर जानिए ना शाय! वत्रक जाँधात्त त्रव ध्लाम मिन চাহিনা চাহিনা এই দীন অহম্বার— ष्रांभन मातिए षाभि त्रश्वि विमीन, विषायना रहस्य रहस्य व्यमान मवात ! व्याननात्र गात्य यनि सांखि नात्र मन विनौक भूमात्र नया। ऋत्थत नत्रन।

আত্ম অপমান।

त्यां कि कर्त कल्ला काल काल काल मुर्थ বিচিত্র এ জগতের সকলের পানে! মানে আর অপমানে স্থথে আর হথে निथित्नद्र एएक नु श्रमन्न भन्नात्। (कर जान वारा (कर नारि जान वारा क्ट पूर्त्र यात्र क्ट काष्ट्र हाम जारम, আপনার মাঝে গৃহ পেতে চাও যদি ञाननादत्र जूरण जद थांक नित्रविध। धनीत मखान जामि, निष् भा िध्यात्री, शमरत्र नूकारना चार्ह त्यारतत्र छाजात्र वािय रेष्ट्रा कति यमि विनारेए भावि গভীর স্থথের উৎস হাদম আমার। কুরারে ভ্রারে ফিব্রি মাগি অন্নপান दिन वाभि क्षि छट्य वाष विश्वान!

कृष णिय।

व्रविधि व्रविधि मथा, त्कन शंशकांत्र, व्याननात्र नरत त्यात्र त्वन नना त्राय ! व्यक्षि विकल किन जीवन जागात्र, আমি আছি তুমি নাই তাই অসম্ভোষ! मक्न कांट्यंत्र भार्य व्याभारत्रहे रहति— কুদ্র আমি জেগে আছে কুধা লয়ে তার, नीर्ग वाह जानिकत्न जागात्त्रहे प्वति कतिरष्ट आयात्र शाय अञ्चलक भात ! কোথা नाथ काथा তव स्नन्त वान, কোথায় ভোমার নাথ বিশ্ব-ঘেরা হাসি ! षामादा काष्ट्रिया गुप्त, क्रत्रां शाशन, আমারে তোমার মাঝে করগো উদাসী! कूज जामि कतिरठहा, राष्ट्र जरकात्र, ভাঙ্গ নাথ, ভাঙ্গ নাথ অভিমান তার!

थार्थना।

ज्यि काष्ट्र नारे व'ला एवत्र मथा जारे "আমি বড়" "আমি বড়" করিছে সবাই! मकलारे छेठूँ रुख मी ज़ादा ममूर्य विगटिए "এ জগতে जात्र किছू नारे!" নাথ তুমি একবার এস হাসি মুখে এরা সবে স্লান হয়ে লুকাক্ লজ্জার— স্থ হঃথ টুটে যাক্ তব মহা স্থৰে, যাক্ আলো অন্ধকার তোমার প্রভায়! নহিলে ডুবেছি আমি, মরেছি হেথায়, निहिल चूराना जात मर्प्यत जन्मन, শুষ ধূলি তুলি শুধু স্থধা-পিপাসার **ट्यम व'ला পরিয়াছি মরণ বন্ধন** ! ়কভু পড়ি কভু উঠি, হাসি আর কাঁদি— **थिना यत्र एक्टन शर्फ त्रिटिय ममिशि**।

বাসনার ফাদ।

यादत्र ठारे, जात्र काष्ट्र व्यामि निरे धत्रा, म बागांत्र ना रहेट बागि रहे जात ! পেয়েছি বলিয়ে মিছে অভিমান করা, অন্যের বাঁধিতে গিয়ে বন্ধন আমার ! নির্থিয়া দার মুক্ত সাধের ভাণ্ডার ত্ই হাতে লুটে নিই রত্ন ভূরি ভূরি, निएत्र याव मत्न कति, ভात्ति ठवा ভात, চোরা জব্য বোঝা হয়ে চোরে করে চুরি চিরদিন ধরণীর কাছে ঋণ চাই, পথের সমল বলে জমাইয়া রাখি, व्याननात्त्र वैक्षा त्राथि मिठा जूल गारे, शार्थित नहेत्र। त्यर कात्राशास्त्र थाकि ! वामनात्र (वाया नित्र (छारव-८छारव छत्री, क्लिंक मद्र ना मन डेशा कि क्रि रे

जित्रिम्य।

(2)

কোথা রাত্রি, কোথা দিন, কোথা ফুটে চক্স কুর্য্য তারা, কোবা আসে কেবা যায়, কোথা বসে জীবনের মেলা, কোবা হাসে কেবা গায়, কোথা থেলে হৃদয়ের থেলা, কোথা পথ, কোথা গৃহ, কোথা পাছ, কোথা পথহারা! কোথা খ'সে পড়ে পত্র জগতের মহারুক্ষ হতে, উড়ে উড়ে ঘুরে মরে, অসীমেতে না পায় কিনায়া, বহে যায় কাল বায়্থ অবিশ্রাম আকাশের পথে, ঝর ঝর মর ময় ওছ পত্র শাম পত্রে মিলে! এত ভালা, এত গড়া, আনাপোনা জীবন্ধ নিথিলে, এত গান এত তান এত কায়া এত কলরব—কোথা কেবা—কোথা সিল্প—কোথা উর্শ্বি—কোথা তার

भजीत जमीम गर्छ निर्मातिज निर्माणिक मर ! जनপूर्व स्विज्ञतन, ज्ञािकिर्विक ज्यांशादिक विनीन ज्ञाकान-गण्ड ७४ वर्ग जांद्य এक "विन-मिन"। (२)

कि लागिया वरम आह, চाहिया तरम् कांत्र लागि! প্রলয়ের পর-পারে নেহারিছ কার আগমন! চির-বিরহীর মত চির-রাত্রি রহিয়াছ জাগি। অসীম অতৃপ্তি লয়ে মাঝে মাঝে ফেলিছ নিশাস, আকাশ-প্রান্তরে তাই কেঁদে উঠে প্রলয়-বাতাস, জগতের উর্ণাজাল ছিঁড়ে টুটে কোথা যায় ভাগি! व्यनस्य वाँभाव मार्थ (कर उव नाहिक मात्रत, পশে ना তোমার প্রাণে আমাদের হৃদয়ের আশ, পশে ना তোমার কানে আমাদের পাথীদের স্বর— मश्य बगरा भिनि द्राप्त जिय विक्रम थोवाम. সহস্র শবদে মিলি কাঁধে তব নিঃশব্দের ঘর. शिम, काँमि, ভाলবাসি, नारे उठ, शिम, कामा, यामा, শাসি থাকি চলে যাই কত ছায়া কত উপছায়া চু

(c)

তाই कि ? नकिन ছाग्ना ? जात्म, थात्क, जात्र भित्न यात्र ? তুমি শুধু একা আছ, আর সব আছে আর নাই ? यूग यूगा खत भ'रत क्ल क्रि, क्ल यात ठाहे ? ल्यान পেয়ে প্রাণ দিই সে কি শুধু মরণের পায় ? थ फूल हारह ना (कह ? लरह ना थ शूका-छेशहांत ? এ প্রাণ, প্রাণের আশা, টুটে কি অসীম শুন্যভাষ! বিশ্বের উঠিছে গান, বধিরতা বসি সিংহাসনে ? বিশ্বের কাঁদিছে প্রাণ, শুন্যে ঝরে অশ্বারি ধার ? यूग यूगारखन (अम (क नहर्त, नाह जिजूनरन ? চরাচর মগ্র আছে নিশিদিন আশার স্বপনে— বাঁশী শুনে চলিয়াছে, সে কি হায় বুথা অভিসার! (वांत्ना ना मक्नि अक्ष, मक्नि अ यात्रात्र इनन, विश्व यिन श्रश्न (मर्थ (म श्रथन काहां र्र श्रथन १ সে কি এই প্রাণহীন প্রেমহীন অন্ধ অন্ধকার ?

(8)

भागि भूषा প্रতিধाনি, প্রাণ খুছে মরে প্রতিপ্রাণ। खग९ षाभना मिर्य यूँ बिर्ध ठाशत श्रीजिमान। षत्रीय উठिছে প্রেম, শুধিবারে অসীমের ঋণ— যত দেয় তত পায়, কিছুতে না হয় অবসান। ষত ফুল দেয় ধরা তত ফুল পায় প্রতি দিন— ষত প্রাণ ফুটাইছে ততই ধাড়িয়া উঠে প্রাণ। याश ब्लाइ जारे पिरम धनौ रुद्ध उठ मौन शैन, অসীমে জগতে এ কি পিরীতির অদোন প্রদান ! काशांत्र शूषिष्ट ध्वा माामन योवन উপशांत्र, नियास नियास जारे कित्र भाष्र नवीन योवन। त्थाय (छेतन जारन तथाय, प्र तथाय तथाय काथात काथात । व्यान मित्न व्यान जात्म,—(कांशा तिरे अनेष जीवन। कुछ ञापनादि मिल, (काथा पारे अमीम ञापन, म कि उरे थागरीन (अमरीन अक अक कारतं।

বঙ্গভূমির প্রতি।

रक्रज्भित थि ।

কাফি। কাওয়ালি।

কেন চেয়ে আছ গো মা ম্থপানে!

এরা চাহে না তোমারে চাহে না যে,

আপন মায়েরে নাহি আনে!

এরা তোমায় কিছু দেবে না দেবে না

মিথ্যা কহে শুধু কত কি ভানে!

তুমিত দিতেছ মা যা আছে তোমারি

বুর্ণ শস্য তব, জাহুবীবারি,
জ্ঞান ধর্ম কত পুণ্য কাহিনী,

এরা কি দেবে তোরে, কিছু না কিছু না

মিথ্যা কবে শুধু হীন প্রাণে।

भिशा करव ७४ शैन পরাপে!

भरनद्र दिवना दाश मा मरन,

नम्रन वादि निवाद' नम्रत्न,

मूथ जूकाও मा श्रि भग्रत,

जूल शिक गठ शैन महाति।

म्नाभारन फिरम श्रेष्ठ गिनि गिनि राध कार्षे कि ना नीर्घ त्रक्रनी, इःथ कानारम कि रूप क्रननी, निर्माम फिर्जनशीन भाषारण!

वन्नवामीत श्रि।

गिला मिक्स । का ७ या नि ।

व्यागात्र (वात्ना ना गाहित्व (वात्ना ना !

ध कि ७४ शिंत (थला श्रामात्र भला,

७४ मिष्ट कथा ছलना !

আমায় বোলো না গাহিতে বোলো না!

এ যে নয়নের জল, হতাশের খাস, কলঙ্কের কথা, দরিদ্রের আশ,

এ যে বৃক্ফাটা ছথে গুমরিছে বৃক্
গভীর মরম বেদনা !

अर्थ शिंक (अंगारित प्रमाति प्

वागांत्र (वाला ना गिहिष्ठ (वाला ना!

अमिह कि रहशे यत्मन कोडानि, क्था (गेंप्थ (गेंप्थं निष्ठ कन्नडानि, মিছে কথা কয়ে মিছে যণ লয়ে

মিছে কাবে নিশি যাপনা!

কে জাগিবে আজু, কে করিবে কাজ,
কৈ ঘুচাতে চাহে জননীর লাজ,
কাতরে কাঁদিবে, মায়ের পায়ে দিবে

সকল প্রানের কামনা।

এ কি শুধু হাসি খেলা, প্রমোদের মেলা,
শুধু মিছে কথা, ছলনা!
স্বামার বোলো না গাহিতে বোলো না!

আহ্বান গীত।

श्थिवी कु िया तियान, শুনিতে পেয়েছি ওই— সৰাই এদেছে লইয়া নিশান, करेदत वाक्वानी करे! স্থগভীর স্বর কাঁদিয়া বেড়ায় বঙ্গদাগরের তীরে, "वात्रावीत घरत क जाहिम् जात्र" **ডाकिएंट्र किर्त्र किर्त्र** ! चरत्र चरत्र रकन ध्यात्र रख्कारनां, नर्थ क्न नारे लाक, मात्रा (मन वर्गाणि मदब्र एक (यन, (वैंटि चांटि खरू (भाक! गना वरह ७४ वाशनात्र मरन ८ इस्मिशित्र, विविधा छेट्ठ व्यवस्थ गगर्व जारम यांत्र कित्रि किति।

কত না সংকট, কত না সস্তাপ মানব শিশুর তরে, কত না বিবাদ কত না বিলাপ মানব শিশুর বরে ! কত ভায়ে ভায়ে নাহি যে বিশ্বাস, কেহ কারে নাহি মানে, वेर्या निर्माठती किनिष्ठ नियान श्रुप्तात्र भाव्यशित्। शनरत्र लूकारमा शनत्र (वनमा, সংশয় जाँधादि यूर्य, क काहादत्र आिक मिरव शा माखना, क ित्व जानग्न श्रुं छ ! করিতে হইবে রণ, शृथिवी श्रेटि छेटिह छेट्छान-শোন শোন সৈক্তগণ।

পৃথিবী ডাকিছে আপন সম্ভানে, বাতাদ ছুটেছে তাই— গৃহ তেয়াগিয়া ভায়ের সন্ধানে চলিয়াছে কত ভাই ! वरत्रत कृतित अत्माह्य वात्रजा, ख्रानाइ कि जाहा मर्व ? জেগেছে কি কবি শুনাতে সে কথা জলদ-গন্তীর রবে ? श्रुपत्र कि काद्रा উঠেছে উথলি ? षाँथि थूलएइ कि कि ? ভেঙ্গেছে কি কেহ সাধের পুতলি ? ছেড়েছে খেলার গেহ ? (कन कानाकानि, (कनदत्र मः भग्न ? (कन मन्न' ভয়ে लाख ? थूरन रफन बांत्र, एडरन रफन छत्र, **ठ**ण शृथिकीत्र मात्य।

धत्रा-श्रास्त्रजारा धृनिए नृष्टोरत्र, জড়িমা-জড়িত তমু, जाशनात्र यात्य जाशनि अंगेरम, घूमात्र की छित्र जातू! চারিদিকে তার আপন উল্লাসে জগৎ ধাইছে কাজে, চারিদিকে তার অনস্ত আকাশে স্বরগ সঙ্গীত বাজে! চারিদিকে তার মানব মহিশা উঠিছে গগণ পানে, थूँ जिएह मानव जाभनात्र मीमा, व्यभीरमञ्जू भाषा थारन । त्म किছूरे जांत्र करत्र ना विश्वाम, वाशनाद्य बात्न वष्, व्याशनि श्रिष्ट व्याशन निश्राप्त, ধুলা করিতেছে জড়া

स्थ प्रथ नाय जनस मः श्रीम, জগতের রঙ্গভূমি— হেথায় কে চায় ভীরুর বিশ্রাম, কেনগো ঘুমাও তুমি ! ডুবিছ ভাদিছ অশ্র হিলোলে, শুনিতেছ হাহাকার— তীর কোথা আছে দেখ মুখ তুলে, এ সমুদ্র কর পার। মহা কলরবে দেতু বাঁধে সবে, তুমি এদ, দাও যোগ— বাধার মতন জড়াও চরণ— একিরে করম ভোগ। তা यिन ना পার' मत्र' তবে मत्र, ছেড়ে দেও তবে স্থান, খুলায় পড়িয়া মর' তবে মর'— **टकन ध विमान गान**!

खरत्र क्टरत्र रम्थ् मूथ जाननात्र, ভেবে দেখ তোরা কারা ! मानदित्र मे धित्रा वाकात्र, কেনরে কীটের পারা ? चार्ट रेजिशंन चार्ट कूनमान, আছে মহত্বের থণি, . পিতৃপিতামহ গেয়েছে যে গান, শোন্ তার প্রতিধানি! খুঁজেছেন তাঁরা চাহিয়া আকাশে গ্রহতারকার পথ— জগৎ ছাড়ায়ে অসীমের আশে উড়াতেন মনোরথ। চাতকের মত সত্যের লাগিয়া তৃষিত আকুল প্রাণে, षिवम त्रखनी ছिल्नन् खाशिया চাহিয়া বিশের পানে।

আহ্বান গীত।

তবে কেন সবে विधन्न हिथान, কেন অচেতন প্রাণ, विकल উচ্ছ रिन क्लिन किर्त्र योग्र বিশ্বের আহ্বান গান। यरएवत शाथा পশিতেছে कान, কেনরে বুঝিনে ভাষা ? তীর্থযাত্রী যত পথিকের গানে, क्न दब कार्य ना वाना ? উন্নতির ধ্বজা উড়িছে বাতাসে, (कनदं नाष्ट्रना প्रान, नवीन किंत्रण कृटिंग्ड आकारभ **किन्द्र किर्या शिन १** किन चाहि खरा, किन चाहि हिरा, পড়ে আছি মুখোমুখি, मानदित्र (खांक চला गांन (गरत्र, জগতের হুথে হুখী!

ठल निर्वाटलांटक, ठल ट्लाकालाय, **Бल खन (क्लिंग्श्ल—** यिশाव अनग्र यानव अनद्य অসীম আকাশ তলে! তরঙ্গ তুলিব তরঙ্গের পরে, न्छा गीछ नव नव, विस्थत काहिनी कां कि कर्श यद **এक-कर्थ इ'रम्न कर** ! মানবের স্থথ মানবের আশা वािकदव आभात প्राप्त, শত লক্ষকোটি মানবের ভাষা ফুটিবে আমার গানে! यानत्वत काष्ट्र यानत्वत यात्थ আমরা পাইব ঠাই— বঙ্গের ত্য়ারে তাই শৃদ্ধা বাজে— গুনিতে পেয়েছি ভাই |

मूट्ह रक्न थ्ना, मूह अञ्चल, ফেল ভিথারীর চীর— পর' নব সাজ, ধরু' নব বল, ভোল' ভোল' নত শির! তোমাদের কাছে আজি আসিয়াছে জগতের নিমন্ত্রণ---मीनशैन दिश एक एक एक शिष्ट्र— দাসত্বের আভরণ। সভারু মাঝারে দাঁড়াবে যথন হাসিয়া চাহিবে ধীরে— পুরব রবির হিরণ কিরণ পড়িবে ডোমার শিরে ! वाँधन दूछिया छेठित्व कृष्टिया क्रारंत्रत्र मंजान, कगंज मासादम याहेरव नू वियो প্রভাতের পরিমল i

উঠ বঙ্গ কবি, মায়ের ভাষায় মুমূধুরে দাও প্রাণ— জগতের লোক স্বধার আশায় त्म ভाষा कतित्व भाग! চাহিবে মোদের মায়ের বদনে, ভাগিবে নয়ন জলে, वैंाधित जगर गानित वेंाधिन মাথের চরণ তলে। वित्यंत याबादत ठाँहे नाहे व'तन, কাঁদিতেছে বঙ্গভূমি, গান গেয়ে কবি জগতের তলে স্থান কিনে দাও তুমি। একবার কবি মায়ের ভাষায় গাও জগতের গান--দকল জগৎ ভাই হয়ে খায়— যুচে যায় অপমান!

শেষ কথা।

মনে হয় কি একটি শেষ কথা আছে, भ कथा इहेल वला भवव्वला इय ! কল্পনা কাঁদিয়া ফিরে তারি পাছে পাছে, তারি তরে চেয়ে আছে সমস্ত হৃদয়! শত গান উঠিতেছে তারি অম্বেষণে, পাথীর মতন ধায় চরাচরময়। শত গান মরে গিয়ে, নূতন জীবনে একটি কথায় চাহে হইতে বিলয় ! रिम कथा इट्टाल वला नीत्रव वांभत्री, थात्र वाकाव ना वीश हित्रिमन তत्त्र, त्म कथा खनिতে मत्व আছে আশা कति, মানব এখনো তাই ফিরিছে না ঘরে। त्म कथाय आपनाद्द्रभाष्ट्रेय ज्ञानित्ज, আপনি কৃতার্থ হব আপন বাণীতে!

Barcode: 4990010250372
Title - Kari O Komal
Author - Tagore, Rabindranath
Language - bengali
Pages - 284
Publication Year - 1886
Barcode EAN.UCC-13

